सृष्टि का आरम्भ

: मूल लेखक :

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ

: अनुवादक :

प्रेमचन्द

सरस्वती-प्रेस,

बनारस ।

परिचय

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ का Back to Methuselah बहुत ही प्रसिद्ध नाटक है। इस नाटक में पाँच भाग हैं—उन्हीं भागों में पहले भाग In the beginning (प्रारम्भ में) का यह अनुवाद है। इसकी पाण्डुलिपि स्व० प्रेमचन्दजी के काग़ज़ात में पाई गई है जिसकी लिखावट तो उनकी नहीं है, पर जिसके ऊपर किये गये सुधारों से ज़ाहिर होता है कि अनुवाद उन्होंने किसी लेखक को बोलकर कराया था। वह अनुवाद यहाँ उपस्थित किया जाता है।

सृष्टि का आरम्भ

(अदन की वाटिका, तीसरे पहर का समय। एक बड़ा साँप अपना सिर फूलों की एक क्यारी में छिपाये हुए और अपने शरीर को एक वृक्ष की शाखाओं में लपेटे हुए पड़ा है। वृक्ष भलीभाँति चढ़ चुका है, क्योंकि सृष्टि के दिन हमारे अनुमान से कहीं अधिक बड़े थे। सर्प उस व्यक्ति को नहीं दिखाई दे सकता जिसको उसकी विद्यमानता का ज्ञान नहीं है, क्योंकि उसके हरे और भूरे रंग के मेल से धोखा होता है। उसके निकट ही फूलों की क्यारी से एक ऊँची चट्टान दिखाई दे रही है। यह चट्टान और वृक्ष दोनों एक हरियाली के किनारे पर हैं, जिसमें एक हरिण का बच्चा मरा और सूखा हुआ पड़ा है और उसकी गरदन टूट गई है। आदम अपने एक हाथ के सहारे चट्टान पर झुका हुआ

मृत शरीर को भयभीत होकर देख रहा है, उसने अपनी बाईं ओर सर्प को नहीं देखा है। वह दाहिनी ओर मुड़ता है और घबड़ाकर पुकारता है।)

आदम—हौआ, हौआ !

हौआ—क्या है, आदम ?

आदम—यहाँ आओ, शीघ्र, कुछ हो गया है !

हौआ—(दौड़कर) क्या, कहाँ ? (आदम हरिण के बच्चे की ओर संकेत करता है) ओह ! (वह उसके पास जाती है और आदम को भी उसके साथ जाने का साहस होता है) इसकी आँखों को क्या हो गया ?

आदम—केवल आखें नहीं, यह देखो ! (उसको ठुकराता है।)

हौआ—अरे यह न करो, यह जागता क्यों नहीं ?

आदम—मालूम नहीं, सो नहीं रहा है।

हौआ—सो नहीं रहा है ?

आदम—देखो तो !

हौआ—(हरिण के बच्चे को हिलाने और उलटने की चेष्टा करते हुए) यह तो कठोर कौर ठडा हो गया है !

आदम—कोई वस्तु इसको जगा नहीं सकती ?

हौआ—इसमें तो विचित्र गध है, ओह ! (अपना हाथ झाड़ती है और उसके पास से हट जाती है) क्या तुमने इसको इसी दशा मे पाया था ?

आदम—नहीं, अभी खेल रहा था कि ठोकर खाकर लड़खडाता हुआ गिर पड़ा, फिर वह हिला तक नहीं और इसकी गरदन मे कोई दोष हो गया है ।

(गर्दन उठाकर हौआ को दिखाने के लिए झुकता है ।)

हौआ—मत छुओ, इसके पास से हट जाओ । (दोनों पीछे हट जाते हैं और थोड़ी दूर से उस लोथ पर बढ़ती हुई घृणा से विचार करते हैं ।)

हौआ—आदम !

आदम—हाँ !

हौआ—मान लो कि तुम ठोकर खाकर गिर पड़ो, तो क्या तुम भी इसी तरह चले जाओगे ?

आदम—ओह ! (थर्रा जाता है और चट्टान पर बैठ जाता है ।)

हौआ—(उसके पार्श्व में बैठकर और उसके घुटनों को पकड़कर) तुमको इसका ध्यान रखना चाहिए, प्रतिज्ञा करो कि ध्यान रखोगे ।

आदम—ध्यान रखने से लाभ क्या ? हमको यहाँ सदैव रहना है, देखती हो सदैव के क्या अर्थ हैं । एक-न-एक दिन मैं भी ठोकरं खा जाऊँगा और गिर पड़ूँगा । मुमकिन है कल ही, और संभव है इतने दिनों बाद जितनी कि इस बाग़ मे पत्तियाँ हैं अथवा नदी के किनारे बालू के कण हैं । तात्पर्य यह कि मैं भूल जाऊँगा और ठोकर खा जाऊँगा ।

हौआ—मैं भी ?

आदम—(भीत होकर) नहीं, नहीं ! मैं अकेला

रह जाऊँगा और सदा के लिए। तुम कभी अपने को इस विपत्ति में न डालना। तुम चला न करो, चुप-चाप बैठी रहा करो; मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा और जिस वस्तु की तुमको आवश्यकता होगी, स्वयं लाकर दूँगा।

हौआ—(काँपते हुए उसकी ओर से मुँह फेर कर अपनी कुहनियों को पकड़कर) मैं इस तरह जल्द घबड़ा जाऊँगी। इसके सिवा तुम्हारा यह परिणाम हुआ, तो फिर मैं अकेली रह जाऊँगी। उस समय वेकार बैठी न रह सकूँगी और अंत में मेरा भी वही परिणाम होगा।

आदम—और फिर ?

हौआ—फिर हम नहीं होंगे, केवल पशु, पक्षी और सर्प होंगे।

आदम—यह न होना चाहिए।

हौआ—हाँ, न होना चाहिए ; किंतु हो सकता है।

आदम—नहीं, कहता हूँ कि नहीं होना चाहिए। मैं जानता हूँ कि ऐसा नहीं होगा।

हौआ—हम दोनों जानते हैं, लेकिन कैसे जानते हैं?

आदम—बाग़ में एक 'शब्द' है, जो मुझको बातें बताया करता है।

हौआ—बाग़ तो शब्दों से पूर्ण है, जो मेरे सिर मे नए नए विचार लाते रहते हैं।

आदम—मेरे लिए केवल एक शब्द है जो मुझ से इतना निकट है मानों मेरे भीतर से आ रहा हो।

हौआ—आश्चर्य है कि मैं तो प्रत्येक वस्तु में शब्द सुनती हूँ और तुम केवल एक शब्द अपने भीतर सुनते हो। मगर कुछ बाते ऐसी भी हैं जो शब्दों के द्वारा नहीं किंतु मेरे भीतर से आती हैं। और यह विचार कि 'मेरा कभी नाश नहीं' मेरे भीतर से आया है।

आदम—लेकिन हम नष्ट हो जायँगे। इस हरिण के बालक की भाँति हम भी गिरेंगे और...(उठकर घबराहट में इधर-उधर टहलने लगता है) मैं इस विद्या का तेज नहीं सह सकता। मुझे इसकी आवश्यकता नहीं। मैं तुम से कहता हूँ कि ऐसा नही होना चाहिए। फिर भी यह नहीं जानता कि किस प्रकार रोकूँ।

हौआ—मैं भी यही अनुभव करती हूँ। आश्चर्य की बात है कि तुम इस प्रकार कह रहे हो। तुम को किसी दशा में कल नहीं! तुम सदैव अपना विचार बदलते रहते हो।

आदम—(डाँटकर) यह क्यों कहती हो? मैंने अपना विचार कब बदला है?

हौआ—तुम कहते हो कि हमारा नाश न होना चाहिए। लेकिन तुम्हीं इसकी शिकायत किया करते थे कि हमको यहाँ सदैव रहना है। किसी-किसी

समय तुम घंटों मौन धारण किये हुए विचारा करते हो और मन ही मन में मुझ पर क्रोधित रहते हो। जब मैं पूछती हूँ कि मैंने क्या किया है, तो तुम कहते हो कि तुम्हारे विषय में नहीं किन्तु अपने यहाँ सदैव रहने की विपत्ति पर ध्यान कर रहा था। परन्तु मैं समझती हूँ कि जिस वस्तु को तुम विपत्ति कहते हो, वह, यहाँ सदैव मेरे साथ रहना है।

आदम—तुम यह क्यों विचारती हो? नहीं, तुम भूल करती हो। (वह फिर मुग्ध होकर बैठ जाता है) मूल विपत्ति तो सदैव अपने साथ रहना है। मैं तुमको चाहता हूँ, परन्तु अपने को नहीं चाहता। मैं कुछ और होना चाहता हूँ। इससे अच्छा मैं चाहता हूँ कि मेरा बारबार फिर से आरभ होता रहे। जिस प्रकार सर्प केचुल बदलता रहता है, उसी प्रकार मैं भी अपने को बदलता रहूँ। मैं अपने से ऊब गया हूँ। परन्तु मुझ को किसी न किसी प्रकार

सहन करना है। एक दिन या कई दिन के लिए ही क्यों, किंतु सदैव के लिए यह एक भयभीत कर देने वाला विचार है। इसी पर मौन होकर विचार किया करता हूँ। और खेद करता हूँ। क्या तुमने कभी इस पर विचार नहीं किया ?

हौआ—मैं अपने विषय मे विचार नहीं करती। इससे क्या लाभ ? मैं जो हूँ, सो हूँ। कोई वस्तु इसको बदल नहीं सकती। मैं तुम्हारे सम्बन्ध में विचार करती रहती हूँ।

आदम—यह ठीक नहीं, तुम सदैव मेरी खोज मे लगी रहती हो। तुमको सदैव यह जानने की चिन्ता रहती है कि मैं क्या करता रहता हूँ। यह तो एक बार ज्ञात होता ही। इसकी जगह कि अपने को मेरे साथ लगाए रखो, तुम को यह यत्न करना चाहिए कि तुम्हारा एक अपना निजी अस्तित्व पृथक् हो।

हौआ—मुझ को तुम्हारा ध्यान रखना है। तुम

सुस्त हो, मलिन रहते हो; अपना ध्यान नहीं रखते, प्रति क्षण स्वप्न देखते रहते हो। यदि मैं अपने को तुम्हारे साथ लगाए न रखूँ, तो तुम दूषित भोजन करने लगोगे और घृणा के योग्य हो जाओगे। इस पर मेरे इतने देखते रहने पर भी तुम किसी दिन मस्तक के बल गिर पडोगे और मृतक हो जाओगे।

आदम—मृतक? यह कौन-सा शब्द है?

हौआ—(हरिण के बच्चे की ओर संकेत करके) इसकी भाँति। मैं इसको मृतक कहती हूँ।

आदम—(उठ कर बच्चे के पास जाते हुए) इसमें कोई अप्रिय बात मालूम होती है।

हौआ—(आदम के पास जाते हुए) यह तो श्वेत छोटे कीडों के रूप में बदल रहा है।

आदम—इस को नदी मे फेंक आओ। यह असह्य हो रहा है।

हौआ—मै इसको स्पर्श करने का साहस नहीं कर सकती।

आदम—तो मैं ही फेक आता हूँ, यद्यपि मुझे इससे घृणा हो रही है। यह हवा को विषमय कर रहा है।

(खुरों को अपने हाथ में लेकर शव को यथासंभव अपने शरीर से दूर लटकाये हुए उस ओर जाता है जिस ओर से हवा आई थी।)

हौआ—(उसकी ओर एक क्षण तक देखती रहती है, फिर घृणा की एक झिझक के साथ चट्टान पर बैठ जाती है और कुछ विचारने लगती है। सर्प का शरीर मनोहर नए रंगों से चमकता हुआ देख पड़ता है। वह पुष्पों की क्यारी से धीरे से अपना सिर उठाता है और हौआ के कान में एक अद्भुत मनोमुग्धकर किन्तु सुरीली ध्वनि में कहता है।)

सर्प—हौआ!

हौआ—कौन है ?

सर्प—मैं हूँ ! तुमको अपना सुन्दर नवीन फण दिखाने आया हूँ। देखो (सुन्दर बेल में अपना फण फैला देता है।)

हौआ—अहा ! किन्तु तुम को बोलना किस ने सिखाया ?

सर्प—तुम ने और आदम ने ! मैं घास मे छिप कर तुम्हारी बातें सुना करता हूँ।

हौआ—यह तेरी बडी बुद्धिमानी है।

सर्प—मैं इस मैदान के पशुओं में सब से अधिक चतुर हूँ।

हौआ—तेरा फण बहुत सुन्दर है (फण को थप-थपाती है और सर्प को प्यार करती है) अच्छे सर्प ! क्या तू अपनी देवी माता हौआ को चाहता है ?

सर्प—मैं उसको पूजता हूँ। (हौआ की गरदन को अपनी दोहरी जीभ से चाटता है।)

हौआ—(उसको प्यार करती हुई) हौआ के प्रिय सर्प ! अब हौआ कभी अकेली न रहेगी। क्योंकि उसका सर्प बातें कर सकता है।

सर्प—बहुत-सी वस्तुओं के विषय मे मै बातें कर सकता हूँ। मैं बड़ा बुद्धिमान हूँ। यह मैं ही था, जिसने तुम्हारे कान में धीरे से वह शब्द कह दिया था जो तुमको नही ज्ञात था—मृतक, मृत्यु, मरना।

हौआ—(काँप कर) इसकी याद क्यों दिलाता है ? मैं तेरा सुन्दर फण देखकर उसको भूल गई थी। तुमको अभागी वस्तुओं की याद नहीं दिलाना चाहिए।

सर्प—मृत्यु भाग्यहीन वस्तु नहीं, यदि तुमने उस पर विजय पाना सीख लिया है।

हौआ—मैं मृत्यु पर विजय कैसे पा सकती हूँ ?

सर्प—एक दूसरी वस्तु के द्वारा, जिसको उत्पत्ति कहते हैं।

हौआ—(उच्चारण की चेष्टा करते हुए) उ...त्...प...त्ति ।

सर्प—हाँ, उत्पत्ति ।

हौआ—उत्पत्ति क्या है ?

सर्प—सर्प कभी मरता नही, तुम किसी दिन देखोगी कि मैं इस सुन्दर केचुल से एक नया सर्प बन कर, और इससे अधिक सुन्दर केंचुल लेकर बाहर निकल आऊँगा । यही उत्पत्ति है ।

हौआ—मैं ऐसा देख चुकी हूँ । बड़े आश्चर्य की बात है ।

सर्प—मैं बडा चतुर हूँ, जब तुम और आदम बातें करते हो तो मैं तुमको 'क्यों' कहते हुए सुनता हूँ । प्रति समय क्यों तुम नेत्रों से वस्तुओं को देखती हो और कहती हो 'क्यों ?' मैं स्वप्न मे देखता हूँ और कहता हूँ 'क्यों नही ?' मैंने 'मृतक' शब्द को अपने आप बनाया है, जिसका तात्पर्य मेरी पुरानी केंचुल

है, जिसको मैंने अपनी नवीनता के समय उतार कर फेंक दिया। इस नवीन को मै उत्पन्न होना कहता हूँ।

हौआ—'उत्पत्ति' एक सुन्दर शब्द है।

सर्प—क्यों नहीं ? मेरी भाँति बार-बार उत्पन्न होओ और सदैव नवीन और सुन्दर बनी रहो।

हौआ—मैं ? इसलिए कि ऐसा होता नहीं, और क्यों नहीं।

सर्प—किन्तु वह 'तो कैसे' हुआ, 'क्यों नहीं ?' तो नही हुआ। बताओ 'क्यों नहीं ?'

हौआ—पर मै इसको पसद नहीं करूँगी। फिर से नया बन जाना अच्छी बात है। किन्तु मेरा पुराना चोला पृथ्वी पर बिल्कुल मेरी भाँति पड़ा रहेगा और आदम उसको पीछे हटते हुए देखेगा, और—

सर्प—नही, इसकी आवश्यकता नही, एक दूसरी उत्पत्ति भी है।

हौआ—दूसरी उत्पत्ति !

सर्प—सुनो, तुमको एक भारी गुप्त-भेद बताता हूँ। मैं बड़ा बुद्धिमान हूँ। मै विचारता रहता हूँ। मै संकल्प का पक्का हूँ और जिस वस्तु की मुझको आवश्यकता होती है, उसको प्राप्त कर लेता हूँ। मैं अपने संकल्प से काम लेता रहा हूँ और मैंने विचित्र-विचित्र वस्तुएँ खाई हैं; पत्थर, सेब, जिनको खाते हुए तुम भयभीत होती हो।

हौआ—तुम्हारा यह साहस !

सर्प—मुझे प्रत्येक बात का साहस हुआ और अन्त में मुझे ऐसा ढंग ज्ञात हो गया जिससे अपने जीवन का भाग अपने शरीर के भीतर सुरक्षित रख सकूँ।

हौआ—जीवन किसे कहते हैं ?

सर्प—वह वस्तु जो मृतक और सजीव हरिण के बालक में अन्तर करती है।

हौआ—कैसे सुन्दर शब्द हैं और कैसी आश्चर्य-

जनक वस्तु है। 'जीवन' सब शब्दों में सबसे प्रिय शब्द है।

सर्प—हाँ जीवन ही पर विचार और चिन्ता करने से मैंने करामात दिखाने की शक्ति प्राप्त की है।

हौआ—करामात ? फिर एक नवीन शब्द ?

सर्प—करामात उस असभव बात को कहते हैं, जो साधारणत: नही हो सकती, परन्तु हो जाती है।

हौआ—मुझे कोई करामात बताओ, जो तुमने की हो।

सर्प—मैंने अपने जीवन का एक भाग अपने शरीर में एकत्रित किया और उसको एक घर में बन्द किया जो उन पत्थरों से बना था जिनको मैंने खाया था।

हौआ—उससे क्या लाभ हुआ ?

सर्प—मैंने उस छोटे घर को धूप दिखाई और सूर्य की उष्णता में रख दिया। वह फट गया और

उससे एक छोटा सर्प निकल आया, जो प्रतिदिन बढ़ता गया, यहाँ तक कि मेरे बराबर हो गया। यही थी दूसरी उत्पत्ति।

हौआ—ओहो, यह तो असीम आश्चर्य-जनक है। यह तो मेरे भीतर भी चेष्टा कर रही है और मुझको घायल किए डालती है।

सर्प—उसने मुझे लगभग फाड़ डाला था, किन्तु इस पर भी मैं जीवित रहा और फिर अपने चोले को फाडकर अपने को इसी प्रकार उत्पन्न कर सकता हूँ। अदन में लगभग इतने सर्प हो जायेंगे, जितने कि मेरे शरीर पर चट्टे हैं। उस समय मृत्यु कुछ न कर सकेगी। यह सर्प और वह सर्प मरते रहेंगे, परन्तु सर्प शेष ही रहेगा।

हौआ—परन्तु सर्प के अतिरिक्त हम सब कभी न कभी मर जायँगे और तब कुछ और शेष न रहेगा, सर्वत्र सर्प ही सर्प रह जाँयगे।

सर्प—यह न होना चाहिए। हौआ, मैं तुमको पूजता हूँ, मेरे पूजन करने के लिए कोई न कोई वस्तु होनी चाहिए, जो तुम्हारी भाँति मुझ से नितांत भिन्न हो। कोई वस्तु सर्प से उत्तम अवश्य होनी चाहिए।

हौआ—हाँ, यह न होना चाहिए, आदम का नाश न हो। तुम बड़े बुद्धिमान हो। बताओ, क्या करूँ ?

सर्प—सोचो, सकल्प करो, मिट्टी खाओ, श्वेत पाषाण को चाटो; इस सेब को खाओ जिससे तुम भयभीत होती हो, सूर्य तुम को जीवन देगा।

हौआ—सूर्य पर मुझको भरोसा नहीं। मैं स्वयं ही जीवन दूँगी। मैं अपने शरीर को चीर कर दूसरा आदम निकालूँगी। चाहे ऐसा करने में मेरे शरीर के टुकड़े टुकड़े क्यों न हो जायँ!

सर्प—अवश्य साहस करो। प्रत्येक बात संभव

का और मेरी भाँति अपने को बदलने का कोई उपाय निकालना चाहिए। उसका संकल्प बलवान् था। वह प्रयत्न करती रही और जितनी इस वाटिका के वृक्षों में पत्तियाँ हैं, उनसे भी अधिक महीनों तक वह संकल्प करती रही। उसकी पीड़ा भयानक थी। उसके क्रन्दन ने अदन को निद्रा से शून्य कर दिया था। उसने कहा—अब ऐसा न होना चाहिए। नये सिरे से जीवन का भार असह्य है। उनके लिए यह क्लेश अत्यन्त अधिक है और जब उसने अपना शरीर बदला, तो एक ललस न थी, वरन् दो थीं; एक तुम्हारी भाँति, दूसरी आदम की भाँति। एक हौआ थी, दूसरा आदम।

हौआ—पर उसने अपने को दो में क्यों विभाजित किया और क्यों हमको एक दूसरे से विभिन्न बनाया?

सर्प—कहता तो हूँ कि यह परिश्रम एक के सहन

करने से बहुत अधिक है। इसमें दो को सम्मिलित रहना चाहिए।

हौआ—क्या तुम्हारा यह तात्पर्य है कि मेरे साथ आदम को भी इस कष्ट में सम्मिलित होना पड़ेगा ? नहीं, वह नहीं सम्मिलित होगा। वह इस परिश्रम को सहन नहीं कर सकता और न शरीर पर कोई कष्ट उठा सकता है।

सर्प—इसकी आवश्यकता नहीं, इसके लिए कोई परिश्रम न होगा। वह स्वयं सम्मिलित होने के लिए तुमसे प्रार्थना करेगा। वह अपनी इच्छा के द्वारा तुम्हारे वश में होगा।

हौआ—तब तो मैं ज़रूर करूँगी, लेकिन कैसे ? ललस ने इस चमत्कार को कैसे किया था ?

सर्प—उसने ध्यान किया।

हौआ—'ध्यान किया' क्या वस्तु है ?

सर्प—उसने मुझसे एक ऐसी घटना की चित्ता-

कर्षक कथा का वर्णन किया, जो एक ऐसी ललस पर कभी नहीं बीती और जो कभी नहीं थी। ललस को उस समय तक यह नहीं ज्ञात था कि 'ध्यान' उत्पन्न करने का आरम्भ होता है। तुम भी, जिस वस्तु की तुमको इच्छा हो, उसका ध्यान करो, उसका संकल्प करो, और अन्त मे जिस वस्तु का सकल्प करोगी उसे उत्पन्न कर लोगी।

हौआ—केवल 'नास्ति' से मैं किस प्रकार कोई वस्तु पैदा कर सकती हूँ?

सर्प—प्रत्येक वस्तु 'नास्ति' ही से उत्पन्न हुई होगी। अपने पुट्ठों पर मांस को देखो। यह सदैव वहाँ नहीं था। जब मैंने प्रथम बार तुमको देखा तो तुम वृक्ष पर नहीं चढ़ सकती थीं, परंतु तुम संकल्प और प्रयत्न करती रहीं, और तुम्हारे सकल्प ने केवल 'नास्ति' से तुम्हारी बाहुओं पर मास का यह लोथड़ा पैदा कर दिया था। यहाँ तक कि तुम्हारी

इच्छा पूर्ण हो गई और तुम एक हाथ के बल अपने को खींचकर वृक्ष की उस डाल पर बैठ जाने के योग्य हो गई जो तुम्हारे सिर से ऊँची थी।

हौआ—वह तो अभ्यास था।

सर्प—अभ्यास से वस्तुएँ घिस जाती हैं, बढ़ती नही। तुम्हारे केश हवा मे तरगे ले रहे हैं जैसे खिंच कर बढ जाने का प्रयत्न कर रहे हों, परतु अभ्यास करने पर भी वह बढ़ नही पाते केवल इसीलिए कि तुमने सकल्प नहीं किया है। जब ललस ने कुछ ध्यान किया था, उसको मौन भाषा में (क्योंकि उस समय तक शब्द नहीं थे) मुझसे वर्णन किया, तो मैंने उसे सम्मति दी कि इच्छा करो, फिर सकल्प करो, और हमको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जिस वस्तु की उसने इच्छा की थी, और संकल्प किया था, वह उसके संकल्प की गति से अपने आप उसके भीतर उत्पन्न हो गई। तब मैंने भी सकल्प किया कि

अपने को बदल कर एक के बदले दो बना लूँ। और बहुत दिनों बाद यह चमत्कार प्रकट हुआ। मैं अपने पुराने चोले से बाहर निकला। इस रूप मे एक दूसरा सर्प मुझसे लिपटा हुआ था। और अब उत्पन्न करने के लिए दो ध्यान हैं, दो इच्छाएं हैं, और दो सकल्प हैं।

हौआ—इच्छा करना, ध्यान करना, संकल्प करना, उत्पन्न करना, यह तो बड़ी लम्बी कहानी है। मुझे इसके लिए कोई एक शब्द बता। तू तो शब्दों का पारदर्शी है!

सर्प—जनना, इससे दोनों तात्पर्य है—ध्यान करके आरम्भ करना और उत्पत्ति पर समाप्त कर देना।

हौआ—मुझको इस कहानी के लिए कोई एक शब्द बता जिसका ललस ने ध्यान किया और जिसको तुझसे मौन भाषा में वर्णन किया, वही

कहानी जो ऐसी अद्भुत थी कि सत्य नहीं हो सकती थी और फिर भी सत्य हो गई।

सर्प—एक शेर।

हौआ—ललस मेरी कौन थी? अब उसके लिए कोई शब्द बता।

सर्प—वह तुम्हारी माता थी।

हौआ—और आदम की भी?

सर्प—हाँ।

हौआ—(उठ कर) मैं जाती हूँ और आदम से जनने के लिए कहती हूँ।

सर्प—(ठट्ठा मार कर हँसता है) !

हौआ—(व्याकुल होकर और चौंक कर) कैसी घृणा पैदा करनेवाला शब्द है। तुझको हो क्या गया है? इससे पहले किसी के मुँह से ऐसा शब्द नहीं निकला।

सर्प—आदम नहीं जन सकता।

हौआ—क्यों ?

सर्प—ललस ने इसको ऐसा ध्यान नहीं किया। वह ध्यान कर सकता है, इच्छा कर सकता है, संकल्प कर सकता है। वह अपने जीवन को समेट कर एक नई रचना के लिए सुरक्षित रख सकता है। वह सब कुछ उत्पन्न कर सकता है, सिवाय एक वस्तु के, और वह एक वस्तु उसकी अपनी वस्तु है।

हौआ—ललस ने उसको वञ्चित क्यों रखा ?

सर्प—इसलिए कि यदि वह ऐसा कर सकता, तो उसको हौआ की आवश्यकता न होती।

हौआ—ठीक है, तो जनना मुझको होगा।

सर्प—हाँ, इसी के द्वारा उसका तुमसे सम्बन्ध है।

हौआ—और मेरा उससे।

सर्प—हाँ। उस समय तक, जब तक कि तुम दूसरा आदम न उत्पन्न कर लो।

हौआ—मुझे इसका तो ध्यान ही न था। तू

बहुत बड़ा है। किन्तु यदि मैं दूसरी हौआ पैदा करूँ, तो सम्भव है कि वह इसकी ओर झुक जाय और मेरे बिना रह सके। मैं तो कोई हौआ नहीं उत्पन्न करूँगी, केवल आदम ही आदम उत्पन्न करूँगी।

सर्प—हौआ के बिना आदम अपने जीवन को नित नया न कर सकेंगे। कभी न कभी तुम हरिण के बच्चे की तरह मर जाओगी और फिर नए आदम बिना हौआ के उत्पन्न करने मे असमर्थ रहेगे। तुम ऐसे परिणाम का ध्यान तो कर सकती हो, किन्तु इसकी कामना नहीं कर सकतीं; इसलिए सकल्प नहीं कर सकतीं, अतएव केवल आदम ही आदम उत्पन्न नहीं कर सकतीं।

हौआ—यदि हरिण के बालक की भाँति मुझको मर जाना है, तो जो कुछ शेष है, वह भी क्यों न मर जाय? मुझे इसकी चिन्ता नहीं।

सर्प—जीवन को रुकना नहीं चाहिए। यह

सबसे पहली बात है। यह कहना अज्ञानता है कि तुमको चिन्ता नहीं। तुमको अवश्य चिन्ता है। यही चिन्ता है जो तुम्हारे ध्यान को उत्तेजित करेगी, तुम्हारी इच्छा को भड़काएगी, तुम्हारे सकल्प को अटल बनायेगी और अन्त मे केवल नास्ति से उत्पत्ति करेगी।

हौआ—(सोचते हुए) केवल नास्ति जैसी तो कोई वस्तु नहीं हो सकती। बाग़ भरा हुआ है, रिक्त नहीं है।

सर्प—मैंने इस पर भली भाँति ध्यान नहीं किया था, यह एक बलवान् विचार है। हाँ, केवल नास्ति जैसी कोई वस्तु नहीं। निस्सन्देह ऐसी वस्तुएँ हैं जिनको हम देखते नहीं। गिरगिट भी हवा खाता है।

हौआ—मैंने एक और बात विचारी है। मैं उसको आदम से कहूँगी (पुकारते हुए) आदम ! आओ ! आओ !

आदम का शब्द—ओ ! ओ !

हौआ—इससे वह प्रसन्न होगा और उसके कुम्हलाए हुए पीड़ित चित्त की चिकित्सा हो जायगी।

सर्प—उससे अभी कुछ न कहो, मैंने तुमको भारी भेद नहीं बताया है।

हौआ—अब और क्या बताना है ? यह चमत्कार मेरा कार्य है।

सर्प—नहीं, उसको भी इच्छा और सकल्प करना है। परन्तु उसको अपनी इच्छा और सकल्प तुमको दे देना होगा।

हौआ—कैसे ?

सर्प—यही तो बडा गुप्त भेद है। चुप, वह आ रहा है।

आदम—(लौटते हुए) क्या वाटिका में हमारे शब्द और उस 'शब्द' के अतिरिक्त कोई और शब्द भी है ? मैंने अभी एक नवीन शब्द सुना था।

हौआ—(उठती है और दौड़कर उसके निकट जाती है) तनिक विचार करो आदम ! हमारे सर्प ने हमारी बातें सुन-सुनकर बोलना सीख लिया है ।

आदम—(प्रसन्न होकर) सचमुच ? (वह उसके निकट से होकर पत्थर के पास जाता है और सर्प को प्यार करता है ।)

सर्प—(प्यार से उत्तर देता है) हाँ, सचमुच, प्रिय आदम !

हौआ—मुझको इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बाते कहनी हैं । आदम, अब हमको सदैव रहने की आवश्यकता नहीं ।

आदम—(आवेश में सर्प का सर छोड़ देता है) क्या ? हौआ, इस विषय मे मुझसे खेल न करो । ईश्वर करे, किसी दिन हमारी समाप्ति हो जाती और इस भाँति कि मानो नहीं हुआ । ईश्वर करे मैं सदैव रहने की विपत्ति से छुटकारा पाऊँ । ईश्वर करे इस

वाटिका का सँवारना किसी दूसरे माली के सिपुर्द हो जाय। और जो संरक्षक उस 'शब्द' की ओर से नियुक्त किया गया है, वह स्वतंत्र हो जाय। ईश्वर करे कि स्वप्न और शान्ति, जो प्रति दिन मुझको यह सब कुछ सहन करने के योग्य बनाए हुए है, कुछ काल मे अक्षय निद्रा और शान्ति हो जाय। बस किसी-न-किसी प्रकार से समाप्ति होनी चाहिए। मुझमें इतनी शक्ति नहीं कि 'सदैवता' को सहन कर सकूँ।

सर्प—तुमको आगामी ग्रीष्म तक भी रहने की आवश्यकता नहीं, और फिर भी कोई समाप्ति नहीं होगी।

आदम—यह नहीं हो सकता।

सर्प—हो सकता है।

हौआ—और होगा।

सर्प—हो चुका है। मुझको मार डालो और कल वाटिका में तुम दूसरा सर्प देखोगे, तुम्हारे हाथ

में जितनी ऊँगलियाँ हैं उनसे भी अधिक सर्प तुमको मिलेंगे।

हौआ—मैं दूसरे आदम और हौआ उत्पन्न करूँगी।

आदम—मैंने कह दिया कि कहानियाँ न गढो। यह नहीं हो सकता।

सर्प—मुझे स्मरण है, जब तुम आप ही एक ऐसी वस्तु थे, जो नहीं हो सकती थी, किंतु फिर भी तुम हो।

आदम—(आश्चर्यपूर्ण होकर) यह तो सच होगा। (पत्थर पर बैठ जाता है।)

सर्प—मैं उस भेद को हौआ से कह दूँगा और वह तुमको बता देगी।

आदम—(शीघ्रता से सर्प की ओर मुड़ता है और उस दशा में उसका पैर किसी तीक्ष्ण वस्तु पर पड़ जाता है) ओह!

हौआ—क्या हुआ ?

आदम—काँटा है, प्रत्येक स्थान पर काँटे हैं। वाटिका को सुहावनी बनाने के के लिए इनको सदैव साफ करते-करते थक गया।

सर्प—काँटे शीघ्र नहीं बढ़ते। अभी बहुत समय तक वाटिका उनसे भर नहीं सकेगी। उस समय तक नही भर सकेगी जब तक कि तुम अपना बोझ उतार कर सदैव के लिए सोने न चले जाओगे। तुम इसके वास्ते क्यों दुःखित हो ? नवीन आदम को अपने लिए अपना स्थान आप ही साफ करने दो।

आदम—यह सत्य है, तू अपना भेद हमको बता दे। देखो हौआ ! सदैव के लिए यदि रहना न पडे, तो कैसा उत्तम हो।

हौआ—(व्याकुलता के साथ भूमि पर बैठकर घास उखाडते हुए) पुरुष की यही दशा है। यह जानते हुए कि हमको सदैव के लिए नही रहना है, इस

प्रकार बातें करने लगे मानो आज ही हमारी समाप्ति होनेवाली है! तुमको इन भयानक वस्तुओं को साफ करना है। नहीं तो जब कभी अज्ञानता में हम पैर उठायेंगे, तो घायल हो जायँगे।

आदम—हाँ, साफ तो अवश्य करना है, परतु थोड़ा ही। कल मैं इन सब को साफ कर डालूँगा।

सर्प—(ठट्ठा मार कर हँसता है) !!!

आदम—यह अद्भुत कोलाहल है, मुझे सुहावना लगता है।

हौआ—मुझको तो अच्छा नहीं लगता। तू किस लिए चिल्लाता है?

सर्प—आदम ने एक नई वस्तु निकाली है, अर्थात् 'कल'। अब जब कि शेष रहने का बोझ तुम्हारे सिर से उठ गया है, तुम नित नई वस्तुएँ निकाला करोगे।

आदम—शेष रहना? यह क्या है?

सर्प—यह मेरा शब्द है जिससे तात्पर्य सदैव के लिए जीवित रहना है।

हौआ—सर्प ने 'होने' के लिए एक सुन्दर शब्द बनाया है, 'जीवन।'

आदम—मेरे लिए कोई ऐसा सुन्दर शब्द बता दे जिससे 'कल' काम करना अभिप्रेत हो, क्योंकि सम्भवतः यह एक भारी और पवित्र आविष्कार है।

सर्प—टालना।

आदम—अत्यन्त प्रिय शब्द है। ईश्वर करे मैं भी सर्प की-सी बोली पाये होता।

सर्प—यह भी हो सकता है, प्रत्येक बात सम्भव है।

आदम—(अचानक भय से चौंक पड़ता है) अरे !

हौआ—मेरी शान्ति ! जीवन से मेरा छुटकारा !

सर्प—'मृत्यु' ! इसके लिए यह शब्द है।

आदम—टालने में बड़ा भय है।

हौआ—क्या भय है ?

आदम—यदि मृत्यु को कल पर टाल दूँ तो मै कभी नहीं मरूँगा। 'कल' कोई दिन नहीं, और न हो सकता है।

सर्प—मैं बडा बुद्धिमान् हूँ, परन्तु मनुष्य विचार मे मुझसे भी अधिक गम्भीर है। स्त्री जानती है 'केवल नास्ति' कोई वस्तु नही। पुरुष जानता है कि 'कल' कोई दिन नही। मैं इनको पूजता हूँ, ठीक करता हूँ।

आदम—यदि मृत्यु को पाना है, तो मुझको कोई सच्चा दिन नियत करना चाहिए, कल नही। मुझको कब मरना चाहिए ?

हौआ—जब मैं दूसरा आदम उत्पन्न कर लूँ, तो तुम मर जाना। मगर नहीं, तुम्हारा जब जी चाहे मर जाओ। (वह उठती है और आदम के पीछे से नरपेक्ष भाव से टहलती हुई वृक्ष के पास जाती है और

उसके सहारे खड़ी होकर सर्प की गरदन को थप-थपाती है।)

आदम—फिर भी कोई शीघ्रता नहीं है।

हौआ—विदित होता है कि तुम इसको 'कल' पर टालोगे।

आदम—और तुम? क्या तुम दूसरी हौआ उत्पन्न करते ही मर जाओगी?

हौआ—मै क्यों मरूँ? क्या तुम मुझसे छुटकारा पाना चाहते हो? अभी तुम चाहते थे कि मैं चुपचाप बैठी रहूँ और चला न करूँ, जिससे कहीं हरिण के बच्चे की भाँति ठोकर खाकर मर न जाऊँ और अब तुमको मेरी परवाह नहीं।

आदम—अब इसमे इतनी हानि नहीं है।

हौआ—(सर्प से क्रोध में) यह मृत्यु जिसको वाटिका मे ले आया है, एक विपत्ति है। वह चाहता है कि मैं मर जाऊँ।

सर्प—(आदम से) क्या तुम चाहते हो कि वह मर जाय ?

आदम—नहीं, मरना मुझको है, हौआ को मुझसे पहले नही मरना चाहिए ; मै अकेला रह जाऊँगा ।

हौआ—तुम दूसरी हौआ पाओगे ।

आदम—यह तो ठीक है । परन्तु सम्भव है कि वह ठीक तुम्हारी जैसी न हो । और हो नही सकती, इसको तो मैं भलीभाँति अनुभव कर रहा हूँ । उसकी वह स्मृतियाँ न होंगी । वह क्या होगी, मैं उसके लिए एक शब्द चाहता हूँ ।

सर्प—अजनबी ।

आदम—हाँ, यह एक अच्छा और ठोस शब्द है—'अजनबी ।'

हौआ—जब नवीन आदम और नवीन हौआ होंगी, तो हम अजनबियों की वाटिका मे होंगे ।

हमको एक दूसरे की आवश्यकता है। (तुरन्त आदम के पीछे आ जाती है और उसके मुख को अपनी ओर उठाती है) आदम, इस बात को कभी न भूलना, कदापि न भूलना।

आदम—मैं क्यों भूलूँगा ? मैंने तो इसको सोचा है।

हौआ—मैंने भी एक बात सोची है। हरिण का बच्चा ठोकर खाकर गिर पड़ा और मर गया, परन्तु तुम चुपचाप मेरे पीछे आ सकते हो और (वह अचानक उसके कंधों को धक्का देती है और उसको मुंह के बल ढकेल देती है) मुझको इस प्रकार ढकेल सकते हो कि मैं मर जाऊँ। यदि मेरे पास यह तर्क न होता कि तुम मेरी मृत्यु की चेष्टा नहीं करोगे, तो मैं सोचने का साहस न करती।

आदम—(मारे भय के वृक्ष पर चढ़ने लगता है) तुम्हारी मृत्यु की चेष्टा ! कैसा भयानक विचार है !

सर्प—मार डालना, मार डालना, मार डालना! यह शब्द है।

हौआ—नवीन आदम और हौआ हमको मार डालेंगे। मैं उनको नहीं उत्पन्न करूँगी। (वह चट्टान पर बैठ जाती है और आदम को नीचे खींचकर अपने पार्श्व में कर लेती है और अपने दाहिने हाथ से उसको पकड़े रहती है।)

सर्प—तुमको उत्पन्न करना होगा; क्योंकि यदि नही उत्पन्न करोगी तो समाप्ति हो जायगी।

आदम—नहीं, वह हमको मार डालेंगे। वह हमारी भाँति अनुभव करेंगे। कोई वस्तु उनको रोकेगी। वाटिका का 'शब्द' जिस तरह हमको बताता है, उसी तरह उनको भी बताएगा कि मार डालना नही चाहिए।

सर्प—बाग़ का 'शब्द' तुम्हारा अपना शब्द है।

आदम—है भी और नहीं भी। वह मुझसे बड़ा है और मैं उसका एक भाग हूँ।

हौआ—वाटिका का 'शब्द' मुझे तो तुमको मार डालने से नहीं रोकता। फिर भी मैं यह नही चाहती कि तुम मुझसे पहले मरो। इसके लिए मुझे किसी शब्द की आवश्यकता नहीं।

आदम—(उसकी गरदन में बाँहें डालकर और प्रभावित होकर) नही, नहीं, बिना किसी शब्द के भी यह एक खुली हुई बात है, कोई न कोई ऐसी वस्तु है जो हमको एक दूसरे से सबन्धित किये हुए है, जिसके लिए कोई शब्द नहीं है।

सर्प—प्रेम। प्रेम। प्रेम।

आदम—यह तो एक इतनी बड़ी वस्तु के लिए बहुत छोटा-सा शब्द है।

सर्प—(ठट्ठा मारकर हँसता है।)।

हौआ—(अधीरता से सर्प की ओर मुड़कर) फिर वही हृदय खुरचने वाला शब्द! इसको बंद कर। तू ऐसा क्यों करता है?

सर्प—सभव है, 'प्रेम' लगभग एक अत्यत छोटी वस्तु के लिए बहुत बडा शब्द हो जाय, परन्तु जब तक यह छोटा है, उस समय तक वह अत्यत मधुर होगा।

आदम—(ध्यान करते हुए) तू मुझे हैरान कर रहा है, मेरी पुरानी विपत्ति यद्यपि भारी थी परतु सीधी-सादी थी। जिन अद्भुत वस्तुओं का तू वादा कर रहा है, वह मुझे मृत्यु जैसी दिव्य-विभूति देने से पहले मेरे अस्तित्व को उलझा सकती है। मै अविनाशी जीवन के भार से व्याकुल था, परतु मेरा चित्त मलिन नहीं था। यदि मुझको यह ज्ञात नही था कि मै हौआ से प्रेम करता हूँ, तो यह भी ज्ञात न था कि संभव है वह मेरा प्रेम छोड़ दे और किसी दूसरे आदम से प्रेम करने लगे। क्या तू इस विद्या के लिए कोई शब्द बता सकता है ?

सर्प—ईर्षा ! ईर्षा ! ईर्षा !

आदम—कैसा भयानक शब्द है ?

हौआ—(आदम को हिलाते हुए) बहुत सोचना नहीं चाहिए। तुम बहुत सोचा करते हो !

आदम—(क्रोध में) मै सोचने से विरत कैसे रह सकता हूँ जब मुझे सदेह हो गया है ? संदेह से प्रत्येक वस्तु अच्छी है। जीवन संदिग्ध हो गया है, प्रेम सन्दिग्ध है, क्या इस नवीन विपत्ति के लिए तेरे पास कोई शब्द है ?

सर्प—भय, भय, भय।

आदम—इसकी चिकित्सा भी तेरे पास है ?

सर्प—आशा, आशा, आशा।

आदम—आशा क्या है ?

सर्प—जब तक तुमको स्थिरता का ज्ञान नही, तुमको यह ज्ञान भी नही कि स्थिर बीते हुए से अधिक रुचिकर नहीं होगा—इसी को आशा कहते हैं।

आदम—इससे मुझे धीरज नहीं होता। मेरे

भीतर भय आशा की अपेक्षा अधिक बलवान है। मुझे निश्चय की आवश्यकता है। (धमकाता हुआ उठता है) यह वस्तु मुझे दे, नहीं तो जब तुझ को सोता हुआ पाऊँगा, तो मार डालूँगा।

हौआ—(सर्प के आसपास अपनी बाहें डालकर) मेरा सुन्दर सर्प ! अरे नहीं, यह भयानक विचार तुम्हारे चित्त मे कैसे आ सकता है ?

आदम—भय मुझसे प्रत्येक कार्य करा सकता है। सर्प ही ने मुझ को भय दिया, अब उससे कह दो कि मुझको विश्वास दे नहीं तो मेरी ओर से भय लेकर जावे।

सर्प—भविष्य को अपने सकल्प से बाँध लो और प्रतिज्ञा कर लो।

आदम—प्रतिज्ञा क्या ?

सर्प—अपनी मृत्यु के लिए एक दिन नियत करो और उस दिन मर जाने का संकल्प कर लो। फिर

मृत्यु सन्दिग्ध न रहेगी, वरन् निश्चित हो जायगी। फिर हौआ यह संकल्प कर ले कि वह तुम्हारे मर जाने तक तुम से प्रेम करेगी। इस प्रकार प्रेम सन्दिग्ध नहीं रहेगा।

आदम—हाँ, यह तो बडी अच्छी बात है। इससे भविष्य बँध जायगा।

हौआ—(अप्रसन्न होकर और सर्प की ओर से मुँह फेरकर) परन्तु इससे आशा विनष्ट हो जायगी।

आदम—(क्रोध से) चुप रहो, आशा निकृष्ट वस्तु है, प्रसन्नता बुरी वस्तु है, विश्वास मंगलमय वस्तु है।

सर्प—'बुरी' किसको कहते हैं ? तुमने एक नया शब्द निकाला है।

आदम—जिस वस्तु से मैं डरता हूँ, वह बुरी वस्तु है। अच्छा हौआ! सुनो, और साँप! तू भी सुन, जिस से तुम दोनों मेरी प्रतिज्ञा को याद रखो। मैं

चारों ऋतुओं के एक सहस्र चक्र तक जीवित रहूँगा।

सर्प—त्रर्ष, वर्ष।

आदम—मैं एक सहस्र वर्ष तक जीवित रहूँगा, उसके बाद नहीं रहूँगा। मैं मर जाऊँगा और शांति प्राप्त करूँगा और उस समय तक हौआ के सिवाय किसी दूसरी स्त्री से प्रेम नहीं करूँगा।

हौआ—और यदि आदम अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहेगा, तो मैं भी उसकी मृत्यु तक किसी दूसरे पुरुष से प्रेम नहीं करूँगी।

सर्प—तुम दोनों ने विवाह का आविष्कार किया है। आदम तुम्हारा पति है, जो किसी दूसरी स्त्री के लिए नहीं हो सकता, और तुम उस की पत्नी हो, जो किसी दूसरे पुरुष के लिए नहीं हो सकती।

आदम—(स्वभावतः हौआ की ओर हाथ बढ़ाते हुए) पति और पत्नी !

हौआ—(अपना हाथ उसके हाथ में देते हुए) पत्नी और पति !

सर्प—(ठट्ठा मारकर हँसता है)

हौआ— (आदम को अपने से अलग करके) मैंने कह दिया कि यह मनहूस कोलाहल न कर ।

आदम—उसकी बात न सुन। कोलाहल मुझे भला लगता है। इससे मेरा हृदय हलका होता है। तू बड़ा प्रसन्नचित्त सर्प है, पर तूने अभी कोई प्रतिज्ञा नहीं की। तू क्या प्रतिज्ञा करता है ?

सर्प—मैं कोई प्रतिज्ञा नहीं करता। मै अवसर से लाभ उठाता हूँ।

आदम—अवसर ? इसका क्या अर्थ ?

सर्प—इसका अर्थ यह है कि मुझको विश्वास से इतना ही भय है जितना तुमको संदेह से, अर्थात् सिवाय संदेह के कोई वस्तु विश्वसनीय नहीं। यदि मैं भविष्य को बाँध लूँ, तो अपने संकल्प को बाँध

लूँगा, और जब संकल्प को बाँध लूँगा तो उत्पत्ति में रुकावट आरम्भ हो जायगी।

हौआ—उत्पत्ति में रुकावट न होनी चाहिए। मैंने कह दिया कि मैं उत्पन्न करूंगी, यदि ऐसा करने में मुझे अपने को खण्ड-खण्ड भी कर देना पड़े!

आदम—तुम दोनों चुप रहो, मैं भविष्य को अवश्य बाँधूँगा। मैं भय से अवश्य स्वतन्त्र होऊंगा। (हौआ से) हम अपनी-अपनी प्रतिज्ञा कर चुके, यदि तुमको उत्पन्न करना है, तो तुम इस प्रतिज्ञा की सीमा के भीतर उत्पन्न करो। अब सर्प की बातें अधिक न सुनो। (हौआ के केश पकड़कर खींचता है।)

हौआ—छोड़ मूर्ख! अभी इसने मुझको अपना भेद नहीं बताया है।

आदम—(उसको छोड़कर) हाँ ठीक है, मूर्ख किसको कहते हैं?

हौआ—मैं नहीं जानती, यह शब्द आप-से-आप

आ गया। जब तुम भूल जाते हो और विचारने लगते हो और भय से पराजित हो जाते हो, उस समय तुम जो कुछ होते हो, वही मूर्ख है। आओ सर्प की बातें सुनें।

आदम—नहीं, मुझे भय लगता है, जब वह बोलता है, तो ऐसा प्रतीत होता है कि भूमि मेरे पैरों के नीचे बैठ रही है। क्या तुम उसकी बातें सुनने के लिए ठहरोगी ?

(सर्प ठट्टा मारकर हँसता है।)

आदम—(खिलकर) इस शब्द से भय दूर हो जाता है। क्या कौतूहल है, सर्प और स्त्री आपस में भेद की बातें करने जा रहे हैं। (हँसता है और धीरे-धीरे चला जाता है। यह इसकी पहली हँसी थी)

हौआ—अब भेद बता, भेद ! (चट्टान पर बैठ जाती है और सर्प के कंठ में भुजाएं डाल देती है। सर्प ओठ के नीचे कुछ कहने लगता है। हौआ का मुख अत्यंत

रोचकता से चमक लगता है । उसकी रोचकता बढ़ती जाती है । यहाँ तक कि फिर उसके स्थान पर अत्यधिक घृणा के चिह्न प्रकट हो जाते हैं और वह अपना मुख अपने हाथों से छिपा लेती है ।)

कुछ शताब्दियों के पश्चात् । प्रातःकाल । ईराक—अरब मे भूमि का एक हरा-भरा खण्ड और वह भी लट्ठों से बना हुआ एक भवन है जो एक बाई वाटिका पर जाकर समाप्त होता है । आदम मध्य वाटिका में भूमि खोद रहा है, उसके दक्षिण ओर हौआ द्वार के पास एक वृक्ष की छाँह में तिपाई पर बैठी हुई सूत कात रही है । उसका चरखा जिसको वह हाथ से चला रही है, एक बड़े चक्र की भाँति है, जो भारी लकड़ी का बना हुआ है । वाटिका की दूसरी ओर काँटों की एक भीति है, जिसमें टट्टी से बंद एक मार्ग है ।

दोनों, किफायत और बेपरवाही के साथ मोटे

कपड़ों और पत्तों को पहिने हैं। दोनों अपना बाल्य-काल और निर्मलता खो चुके हैं। आदम की दाढ़ी बढ़ी हुई है और उसके केश बेढगे कटे हुए हैं। परन्तु दोनों स्वस्थ हैं और तरुण अवस्था मे हैं। आदम एक कृषक की भाँति थका हुआ दृष्टि आता है। हौआ अपेक्षाकृत अधिक प्रसन्न है। वह बैठी कात रही है और कुछ विचार कर रही है।

एक पुरुष का शब्द—अहा, माता !

हौआ—(दृष्टि उठाकर सम्मुख टट्टी की ओर देखती है) काबील आ रहा है।

(आदम घृणा प्रदर्शित करता है और बिना सिर उठाए हुए धरती खोदने में लगा रहता है।)

क़ाबील टट्टी को ठोकर मारकर मार्ग से अलग कर देता है और लम्बे-लम्बे पगों से वाटिका में प्रवेश करता है। बातचीत और रूप-रंग से वह एक

हठीला सिपाही ज्ञात होता है। वह एक लम्बे बल्लम और चर्म की एक चौड़ी ढाल से सुसज्जित है। ढाल पर पीतल मढ़ा हुआ है। उसकी लोहे की टोपी सिंह के सिर से बनाई गई है, जिसमे बैल के सींग लगे हुए हैं। वह लाल कवच पहने हुए है और एक पदक लगाए हुए है। पदक सिंह-चर्म पर टँका हुआ है जिसमे सिंह के नख लटक रहे है। पगों मे खडाऊँ हैं जिनपर पीतल का काम बना हुआ है। उसकी टाँगें पीतल के आवरण से सुरक्षित हैं। उसकी सिपाहियों जैसी खडी मूछे तैल से चमक रही हैं। माता-पिताके साथ उसका बर्ताव ऐसा है, जिससे उसकी उद्दण्डता और अवज्ञा का पता चलता है। वह जानता है कि उसके ढग पसन्द नहीं किए जाते और न वह क्षमा किया गया है।

काबील—(आदम से) अभी तक धरती खोदना समाप्त नहीं हुआ? तुम सदा धरती खोदते रहोगे

और सदा उसी पुरानी नाली में लगे रहोगे, कोई उन्नति नहीं, कोई नया विचार नहीं, कोई कीर्ति नहीं! यदि मैं भी इसी भूमि खोदने में लगा रहता, जैसा कि तुमने मुझे सिखाया था, तो आज मैं कुछ न होता।

आदम—तुम भाला और ढाल लिए हुए इस समय क्या हो, जब कि तुम्हारे भाई का रक्त धरती के भीतर से, तुम्हारे विरुद्ध क्रन्दन कर रहा है!

क़ाबील—मैं पहला वध करनेवाला हूँ, तुम केवल पहले मनुष्य हो! प्रत्येक व्यक्ति पहला मनुष्य हो सकता है। यह ऐसा ही सहज है जैसा कि पहली गोभी होना। किन्तु पहला हत्यारा होने के लिए, साहसी मनुष्य की आवश्यकता है।

आदम—यहाँ से चले जाओ, हमारा पीछा छोड़ दो। हम को अलग रखने के लिए ससार बहुत विस्तृत है।

हौआ—तुम उसको क्यों भगाते हो? वह मेरा है। मैंने उसको अपने शरीर से बनाया था। मैं अपनी बनाई हुई वस्तुको कभी-कभी देखना चाहती हूँ।

आदम—तुमने तो हाबील को भी बनाया था। इसने हाबील को मार डाला; इस पर भी क्या तुम उसको देखने की कामना कर सकती हो?

काबील—मैंने हाबील को मार डाला, तो यह किसका अपराध था? मार डालने का आविष्कार किसने किया था? मैंने? नहीं, उसी ने आविष्कार किया था। मैं तो तुम्हारी शिक्षा पर चल रहा था। मैं तो धरती खोदा करता था और कूड़ा-करकट साफ किया करता था। मैं पृथ्वी का फल खाता था और तुम्हारी तरह परिश्रम से जीवन-निर्वाह करता था। मैं मूर्ख था, किन्तु हाबील नए विचार और साहस का मनुष्य था। वह खोजी था और वस्तुतः

उन्नति करने वाला था। उसने रक्त का अनुसधान किया और हत्या का आविष्कार किया। उसने यह ज्ञात किया कि सूर्य की अग्नि ओस की बूँदों के द्वारा नीचे लाई जा सकती है। उसने अग्नि को सदैव प्रकाशमान रखने के लिए एक बलि का स्थान निर्माण किया। जितने पशुओं को मारता था, उनके मांस को बलि-स्थान मे अग्नि से पकाता था। वह अपने को मांस खा-खाकर जीवित रखता था। उसको अपना आहार प्राप्त करने के लिए केवल इसकी आवश्यकता थी कि अपना दिन आखेट जैसे स्वाध्य-दायक और गौरवपूर्ण कार्य में व्यय करे और फिर एक घटा अग्नि के साथ खेल करे। तुमने उससे कुछ भी नहीं सीखा। तुम परिश्रम करते रहे और मुझसे भी यही काम कराते रहे। मैं हाबील के हर्ष और स्वाधीनता पर ईर्ष्या करता था। मैं अपने को इसलिए तुच्छ समझता था कि तुम्हारा अनुकरण

करने के स्थान पर उसका अनुकरण नहीं करता था। वह ऐसा भाग्यवान् था कि अपने भोजन मे उस 'शब्द' को भी सम्मिलित रखता था, जिसने उसको अनेक नई बातें बताई थीं। वह कहता था—वह 'शब्द' उस अग्नि का 'शब्द' है, जो मेरा भोजन पकाती है और जो अग्नि भोजन पका सकती है, वह खा भी सकती है। यह सच था कि मैंने अग्नि को बलि-स्थान मे भोजन को समाप्त कर देते हुए स्वयं देखा, तब मैंने भी एक बलि-स्थान बनाया और उस पर भोजन की भेंट चढाई। अन्न, मूल और फल सब, व्यर्थ कुछ न हुआ। हाबील मुझ पर हँसता था और तब एक बड़ी बात मैंने सोची—'क्यों न हाबील को मार डालें, जिस तरह वह पशुओं को मारा करता है।' मैंने वार किया और वह मर गया, जिस प्रकार पशु मरा करते थे। इसके बाद मैंने तुम्हारी मूर्खता और परिश्रम के जीवन को छोड दिया और उसकी

तरह निर्वाह करने लगा—शिकार, रक्त बहाना। शिकार के द्वारा क्या मैं तुमसे श्रेष्ठ, तुमसे अधिक बलिष्ट, तुमसे अधिक प्रसन्न और तुमसे अधिक स्वाधीन नहीं हूँ ?

आदम—तुम अधिक बलिष्ट नहीं हो, तुम ठिगने हो। तुम्हारा जीवन दृढ़ नही हो सकता। तुमने पशुओं को अपने से भयभीत कर दिया है। सर्प ने अपने को तुम से बचाने के लिए विष उत्पन्न कर लिया है। मैं स्वयं तुम से डरता हूँ। यदि तुम अपनी माता की ओर एक पग और बढ़े तो मैं अपनी कुदाल से तुमको उसी तरह मार कर गिरा दूँगा, जिस तरह तुमने हाबील को मार कर गिरा दिया था।

हौआ—वह मुझको मारेगा नही, वह मुझसे प्रेम करता है।

आदम—वह हाबील से भी प्रेम करता था। परन्तु उसको उसने मार डाला।

काबील—मैं स्त्रियों को मारना नहीं चाहता, मैं अपनी माँ को नहीं मारूँगा और उसी के विचार से तुमको भी नहीं मारूँगा। यद्यपि बिना तुम्हारे कुदाल की धार में आए हुए इस भाले को तुम्हारे पार कर सकता हूँ। मुझे यह ध्यान न होता, तो मै तुम्हे मार डालने की चेष्टा किए बिना न रहता, यद्यपि डरता हूँ कि कहीं तुम न मुझे मार डालो। मैंने सिंह और वन-शूकर से सग्राम किया है, यह देखने के लिए कि कौन किसको मार डालता है। मैंने मनुष्य के साथ भी युद्ध किया है। यह है तो भयानक काम पर इससे अधिक आनद भी किसी और काम मे नहीं। मैं इसको लड़ाई कहता हूँ। जो कभी लड़ा नहीं है, जीवन का आनद वह नहीं जानता। यही आवश्यकता मुझको माँ के पास ले आई है।

आदम—अब तुमको एक दूसरे से क्या प्रयोजन? वह उत्पन्न करनेवाली है और तुम विनाश करने वाले हो।

क़ाबील—मैं विनाश कैसे कर सकता हूँ जब तक वह उत्पन्न न करे ? मैं चाहता हूँ कि वह और पुरुष उत्पन्न करती रहे, और हाँ, स्त्रियाँ भी जिससे वह सब अपनी-अपनी बारी से और अधिक पुरुष उत्पन्न करें, असंख्य पुरुषों की, जितनी कि सहस्र वृक्षों में पत्तियाँ होंगी उनसे भी अधिक पुरुषों की एक बड़ी भारी रचना का ध्यान मेरे मस्तिष्क मे है। मैं उनको दो बड़े भागों मे विभाजित करूँगा। एक का सेनापति मैं होऊँगा, दूसरे का वह व्यक्ति जिससे मैं सबसे अधिक भय करूँ और जिसको सबसे पहले मार डालना चाहूँ। तनिक विचार तो करो, मनुष्य का यह सारा दल आपस में लड़ता-मरता रहेगा। जय की पुकार, उत्तेजना के शब्द, निराशा का गान, दुःख की विनय, निःसन्देह इन्हीं में जीवन होगा। ऐसा जीवन जो पूर्ण-रूप से कार्य मे लाया गया हो। एक प्रज्ज्वलित आग का और आँधी का जीवन, जिसने

उसको न देखा होगा, न सुना होगा, न अनुभव किया होगा और न परीक्षा की होगी। वह इस आदम के सम्मुख, जिसने यह सब कुछ किया होगा, अपने को अपदार्थ और मूर्ख समझेगा।

हौआ—और मैं! मैं केवल एक सुगम द्वार होऊँगी पुरुषों को उत्पन्न करने का, जिससे तुम उनको मार डालो!

आदम—या वह तुमको मार डालें!

क़ाबील—माता! पुरुषों का उत्पन्न करना तुम्हारा अधिकार है, तुम्हारा काम है। तुम्हारे कष्ट से तुम्हारा गौरव है और तुम्हारी विजय है। तुम मेरे पिता को जैसा कि तुम कह रही हो, इसके लिए केवल अपना एक द्वारा बना लेती हो। उसको तुम्हारे लिए भूमि खोदनी पड़ती है, परिश्रम करना पड़ता है, चलना पड़ता है, बिलकुल उस बैल की भाँति जो भूमि खोदने मे उसे सहायता देता है, या उस गधे की

भाँति जो उसका बोझा लादता है। कोई स्त्री मुझसे मेरे पिता का जीवन नहीं व्यतीत करा सकती, मैं शिकार करूँगा, लड़ूँगा और अपने नस-नस की शक्ति व्यय करूँगा। जब अपने प्राण संकट में डाल कर जंगली सुअर मारकर लाऊँगा, तो मैं अपनी स्त्री के सम्मुख लाकर डाल दूँगा कि वह उसको पकावे। और उसके परिश्रम के बदले में उसको भी एक कौर दे दूँगा। उसको कोई दूसरा भोजन नहीं मिलेगा। इससे वह मेरी चेरी हो जायगी। और जो मुझको मार डालेगा, वह उस स्त्री को लूट के माल की तरह ले जायगा। पुरुप स्त्री का स्वामी होगा, न कि उसका बालक और मज़दूर!

(आदम अपनी कुदाल फेक देता है और ध्यान से हौआ को देखने लगता है।)

हौआ—आदम! क्या तुम परीक्षा मे पड़ गए?

क्या हमारे आपस की प्रीति से तुमको यह बात उत्तम मालूम होती है ?

कावील—प्रीति का हाल वह क्या जाने ? जब वह लड चुकेगा तब भय और मृत्यु का सामना कर लेगा। जब वह अपनी शक्ति का अंतिम आवेश व्यय करके आदोलन कर चुकेगा, उस समय उसको ज्ञान होगा कि वास्तव में स्त्री के आलिंगन में प्रेम से शांति प्राप्त करना किसको कहते है। उस स्त्री से पूछो जिसको तुमने उत्पन्न किया है और जो मेरी पत्नी है। क्या वह मेरी पुरानी चाल पसंद करेगी, जब कि मैं आदम का अनुसरण करता था, कृषि और मजदूरी करता था।

हौआ—(क्रोध में चरखा छोड़कर) तुम्हारा मुँह कि तुम यहाँ आकर लुआ * पर अभिमान करो जो

* बार्टन ने अपने नाटक में क़ाबील की स्त्री का नाम आदा बताया था।

किसी काम की नहीं और जो बेहद बुरी लडकी और सबसे निकम्मी पत्नी है ! तुम उसके स्वामी हो। तुम तो आदम के बैल या अपने रक्षक श्वान से भी कहीं अधिक उसके दास हो। निःसंदेह जब तुम अपने प्राण संकट मे डालकर जंगली सुअर का शिकार करोगे, तो उसके परिश्रम के बदले मे एक कौर उसके सम्मुख भी डाल दोगे। अहाहा ! दुर्भाग्य ! क्या तुम यह समझते हो कि मैं उससे या उससे अधिक तुमसे परिचित नहीं हूँ ? क्या तुम्हारा प्राण उस समय भी संकट मे होता है जब तुम गिलहरी या नीली लोमडी को मारते हो, जिससे वह उनको अपने शरीर से लटकाकर स्त्री से पशु बन जाय ? जब तुम बेबस और बलहीन पक्षियों को जाल में फँसाते हो तो केवल इसलिए कि लुआ को साधारण और हलाल खाद्य खाने में कष्ट होता है। तो उस समय कैसे सूरमा मालूम होते हो ? तुम सिंह को

मारने के लिए अवश्य अपनी जान संकट में डालते हो, किंतु उसका चर्म किसको मिलता है, जिसके लिए तुमने भय का सामना किया! लुआ उसको अपना बिछौना बनाने के लिए ले लेती है और उसका सडा हुआ मास तुम्हारे आगे फेक देती है, जिसको तुम खा भी नहीं सकते। तुम लडते हो, इस कारण कि समझते हो कि वह इससे तुम्हारा आदर करती है और तुमको चाहती है। मूर्ख! वह तुमको इस प्रयोजन से लडाती है कि तुम उसको सुखभोग के सामान और मारे हुए लोगों का माल लाकर देते हो, और वह लोग जो तुमसे डरते है, उसको सोना-चाँदी और धन देते रहते हैं। तुम कहते हो कि मैं आदम को केवल एक माध्यम बनाए हुए हूँ! मैं तो चरखा चलाती हूँ और घर की देख-भाल करती हूँ, सतान उत्पन्न करती हूँ और उनका पालन करती हूँ, मै तो एक स्त्री हूँ और पुरुषों को लुभाने और उनका शिकार करने के लिए

कोई पालतू पशु नहीं हूँ ! तुम क्या हो ? एक अभागे दास, जो मुँह पर मुलम्मा किए हो ! या पशुओं के बालों की एक गठरी हो ! जब मैंने उत्पन्न किया था तो तुम एक मनुष्य के बालक थे और लुआ एक मनुष्य की बालिका। तुम लोगों ने अब अपने को क्या बना डाला है ?

काबील—(बल्लम को ढाल में पहनाकर मूँछों को ऐंठता हुआ) मनुष्य से उत्तमतर भी कोई वस्तु है— 'शूर'; और वही है मनुष्य-शिरोमणि।

हौआ—नर-शिरोमणि ! तुम तो नराधम हो। तुम्हारा अन्य पुरुषों के साथ वही सबंध है जो सफेद लोमड़ी का शशक के साथ है, और लुआ का तुम्हारे साथ वह सबंध है, जो जोंक का सफेद लोमड़ी के साथ है। तुम अपने पिता को तुच्छ समझते हो, परंतु जब वह मरेगा, तो संसार उसके जीवन के कारण अधिक पूर्ण हो चुका होगा। जब तुम मरोगे, तो लोग

कहेंगे वह बडा लडाका था, संसार के लिए यह उत्तम होता कि वह उत्पन्न न हुआ होता, और लुआ के विषय मे वह कुछ न कहेंगे, वरन् जब उसको स्मरण करेंगे, तो उसके नाम पर थूक देंगे।

क़ाबील—वह सग रखने के लिए तुमसे अच्छी स्त्री है और यदि वह भी मुझको उसी प्रकार बुरा कहती जिस प्रकार तुम कह रही हो या जिस प्रकार आदम को बुरा कहा करती हो, तो मैं मारते-मारते उसको नीला कर देता। मैंने ऐसा किया भी है और तुम कहती हो कि मैं दास हूँ।

हौआ—इस कारण कि उसने दूसरे पुरुष पर दृष्टि डाली थी और तुम उसके पैरों पर गिरे और रो-रोकर क्षमा माँगने लगे और पहले से दस गुना उसके दास हो गये और वह जब भलीभाँति कराह चुकी और उसकी पीडा कम हुई, तो उसने तुमको क्षमा कर दिया। क्यों सच है कि नहीं?

क़ाबील—वह मुझसे पहले से अधिक प्रेम करने लगी। यही स्त्री का वास्तविक स्वभाव है।

हौआ—(माता की भाँति उस पर करुणा करके) प्रेम! तुम इसको प्रेम कहते हो! इसको स्त्री का स्वभाव कहते हो। मेरे पुत्र! इसका नाम न पुरुष है न स्त्री, न इसको प्रेम कहते हैं, न जीवन। तुम्हारी अस्थियों मे वास्तविक बल नहीं और न तुम्हारे शरीर मे ख़ून है।

काबील—हा हा! (अपने वल्लम को पकड़कर पूरे बल से घुमाता है।)

हौआ—हाँ, तुमको आप ही अपने बल का अनुमान करने के लिए छड़ी घुमाने की आवश्यकता होती है। तुम विना कड़वा किये हुए और विना खौलाये हुए जीवन के स्वाद का अनुभव नहीं कर सकते। तुम लुआ का प्रेम, जब तक उसका मुख रँगा हुआ न हो, अनुभव नहीं कर सकते। तुम उसके

शरीर की गरमी नहीं अनुभव कर सकते, जब तक कि वह गिलहरी के बालों से ढँकी न हो। तुम सिवा दुःख के कुछ नहीं अनुभव कर सकते और न सिवा मिथ्या के किसी वस्तु का विश्वास कर सकते हो। तुम जीवन के उन दृश्यों के देखने के लिए मस्तक भी नहीं उठाओगे, जो तुम्हारे चारों ओर हैं, किन्तु कोई लडाई या मृत्यु देखने के लिए दस मील दौड़ते चले जाओगे।

आदम—बस! बहुत कहा जा चुका। लड़के को छोड दो।

काबील—लड़का! हा हा!

हौआ—(आदम से) तुम शायद यह विचार रहे हो कि सभव है, इसका जीविकोपाय तुम्हारे जीविको-पाय से उत्तम हो। तुम अभी तक परीक्षा करने में लगे हुए हो। क्या तुम भी मेरे साथ वह बर्ताव करोगे, जो वह अपनी स्त्री के साथ करता है? क्या तुम भी

सिंह और भालू का शिकार करना चाहते हो, जिससे मेरे सोने के लिए चमड़ों की बहुतायत हो जाय ? क्या मैं भी अपना मुख रँगा करूँ और अपनी बाहुओं को नरम और कोमल बनाकर खराब कर डालूँ ? क्या मैं भी पिड़की, बटेर और बकरी के बच्चों का मास खाने लगूँ जिनका दूध तुम मेरे लिए चुराकर ले आया करोगे ?

आदम—तुम्हारे साथ बसर करना योंही एक परीक्षा है। जैसी हो, वैसी रहो। मैं भी जैसा हूँ, वैसा रहूँगा।

क़ाबील—तुममे से कोई जीवन को नही जानता। तुम सीधे-सादे ग्रामीण मनुष्य हो। तुम उन बैलों, गधों और कुत्तों के दास हो, जिनको तुमने अपनी आवश्यकताओं के लिए पाल रखा है। मै तुमको उभारकर उससे अधिक ऊँचाई पर ला सकता हूँ। मैंने एक उपाय सोचा है। क्यों न हम अपनी सेवा के लिए

पुरुष और स्त्रियों को पाले, क्यों न बाल्यावस्था ही से उनका इस रीति से पालन करे कि उनको किसी दूसरे प्रकार जीवन का ज्ञान न होने पावे, जिसमे वह स्वीकार कर ले कि हम देवता हैं और वह यहाँ केवल इसलिए हैं कि हमारे जीवन को गौरव-शाली बनाये रहे ?

आदम—(प्रभावित होकर) यह तो निःसदेह एक बहुत बडा विचार है ।

हौआ—(घृणापूर्वक) बहुत बडा विचार है ।

आदम—हाँ, जैसा कि साँप कहा करता था, 'क्यों नहीं ?'

हौआ—क्योंकि ऐसे नीचों को मैं अपने घर मे नहीं रहने दूँगी, क्योंकि ऐसे पशुओं से मुझको घृणा है जिनके दो शिर हों या जिनके अग सूखे हों, या जो कुरूप, हठी, और प्रकृति-विरुद्ध हों । मैंने पहले ही क़ाबील से कह दिया कि वह पुरुष नहीं है और न

'लुआ' स्त्री है। दोनों राक्षस हैं, और अब तुम उनसे भी अधिक प्रकृति के विरुद्ध राक्षस उत्पन्न करना चाहते हो, जिसमें तुम केवल सुस्त और बेकार हो जाओ और तुम्हारे पाले हुए 'मानवी पशु' परिश्रम को एक झुलसनेवाली व्याधि समझें। अच्छा स्वप्न है, क्या कहना! (क़ाबील से) तुम्हारा पिता तो केवल साधारण ही मूर्ख है, किन्तु तुम्हारे रोम-रोम मे मूर्खता व्याप्त है, और तुम्हारी स्त्री तुमसे भी अधिक मूर्खा है।

आदम—मैं क्यों मूर्ख हूँ? मैं तुमसे अधिक मूर्ख कैसे हो सकता हूँ?

हौआ—तुमने कहा था कि वध कभी नहीं होगा, इसलिए कि 'शब्द' हमारी सतान को इससे रोकेगा। उसने काबील को क्यों नहीं रोका?

क़ाबील—उसने मना तो किया था, किन्तु मैं कोई बच्चा नहीं हूँ कि एक शब्द से डर जाऊँ। 'शब्द' ने

समझा था कि मैं अपने भाई का रक्षक होने के सिवा और कुछ नहीं हूँ। उसको ज्ञात हो गया कि मैं 'मैं' हूँ और हाबील को भी वही होना चाहिए और अपनी देखभाल आप करनी चाहिए। जिस प्रकार कि मैं उसका रक्षक था उससे अधिक वह मेरा रक्षक नहीं था, फिर उसने तुझको क्यों न मार डाला ? यदि मुझ-को कोई रोकने वाला नही था, तो उसको भी कोई रोकनेवाला न था। व्यक्तिगत सामना था और मैं जीत गया। मैं पहला विजेता था।

आदम—जब तुमने यह सब सोचा था तो 'शब्द' ने तुमसे क्या कहा था ?

क़ाबील—क्यों ? उसने मुझको अधिकार दे दिया और कहा कि मेरा यह कृत्य मुझपर एक धब्बा है, एक जला हुआ धब्बा, जिससे कोई मुझको वध न कर सके, जैसा कि हाबील अपनी भेड़ों पर लगा देता था। मैं यहाँ ठीकमठीक खड़ा हूँ और जिन कायरों

ने कभी वध नहीं किया, जो अपने भाइयों के रक्षक बनने से सन्तुष्ट हैं, वह तिरस्कृत समझकर छोड़ दिए जाते हैं और शशकों की तरह मार डाले जाते हैं। जो काबील के ज्ञान पर चलेगा, वह संसार पर शासन करेगा और वह यदि हारकर गिर जायगा, तो उसका सात गुना बदला लिया जायगा। 'शब्द' ने यह कह दिया है, अतः तुमको और दूसरों को मुझसे विद्रोह करते समय सावधान रहना चाहिए।

आदम—डींग मारना और ढिठाई छोड़ो और सच-सच बताओ, क्या 'शब्द' यह नहीं कहता कि यदि कोई दूसरा तुमको तुम्हारे भाई के वध के लिए मार डालने का साहस नहीं कर सकता, तो तुम स्वय अपने को मार डालो ?

क़ाबील—नहीं।

आदम—यदि तुम झूठ नहीं बोलते, तो फिर ईश्वरीय न्याय कोई वस्तु नहीं।

काबील—मैं झूठ नहीं बोलता, ईश्वरीय न्याय अवश्य एक वस्तु है क्योंकि 'शब्द' मुझसे कहता है कि मैं अपने को प्रत्येक व्यक्ति के आगे उपस्थित करूँ, जिसमें यदि वह मुझे मार डाल सके, तो मार डाले। बिना जोखिम के मैं महत्वशाली नही हो सकता। हाबील का खून बहाना मैं इसी रूप में देख रहा हूँ। जोखिम और भय पग-पग पर मेरे पीछे हैं। बिना इसके साहस का कोई अर्थ नहीं होता और साहस ही वह वस्तु है, जो रक्त को गरमाकर लाल और तेज-पूर्ण बना देता है।

आदम—(अपनी कुदाल उठाकर फिर खोदने की तैयारी करता है) अच्छा अब चले जाओ। तुम्हारा यह तेजपूर्ण जीवन एक सहस्र वर्ष तक नही रहेगा और मुझे एक सहस्र वर्ष तक रहना है। तुम सब यदि परस्पर, या हिंस्र पशुओं के साथ लडने से नहीं मरोगे, तो उस व्याधि से मर जाओगे, जो स्वय तुम्हारे भीतर

विद्यमान है। तुम्हारा शरीर मनुष्य के शरीर के सदृश नहीं, वरन् उस 'छतरफेन'...के सदृश परिपालित होता है जो वृक्षों पर अकुरित होता है। श्वास लेने के स्थान पर तुम छींकते हो और खाँसते हो और अततः मुरझाकर नष्ट हो जाते हो। तुम्हारी आँते सड जाती हैं, तुम्हारे सिर के केश झड़ जाते हैं, तुम्हारे दाँत मैले हो जाते हैं और गिर जाते है और तुम समय से पहले मर जाते हो; इसलिए नही कि तुम मरना चाहते हो, बल्कि इसलिए कि तुमको मरना पडता है। मैं खेती करूँगा और जीवित रहूँगा।

क़ाबील—और तुम्हारा यह सहस्र वर्ष का जीवन तुम्हारे किस काम का है, तुम पुरानी घास हो, सौ वर्ष तक धरती खोदते रहने से क्या अब तुम कुछ बढ़िया खोदने लगे हो ? मैं उतने समय तक नहीं जीवित रहा हूँ, जितने समय तक तुम जी चुके हो। किंतु खेती की कला से संबन्ध रखनेवाली जितनी बातें हो

सकती थीं, उनको मैं जानता हूँ और अब उसको छोडकर उससे उत्तम कलाओं के जानने में तत्पर हूँ। मैं लडना और शिकार करना, अर्थात् मार डालने की विद्या जानता हूँ। तुमको अपने सहस्र वर्ष का निश्चय कैसे हो सकता है ? मैं अभी तुम दोनों को मार डाल सकता हूँ और तुम दो भेडों से अधिक अपनी रक्षा नहीं कर सकते। मैं तुमको छोड देता हूँ, परन्तु दूसरे तुमको मार डाल सकते हैं। क्यों न वीरता के साथ जीवन निर्वाह करो और शीघ्र मरकर दूसरों के लिए स्थान रिक्त कर दो ? मैं स्वयं जो तुम दोनों की अपेक्षा कहीं अधिक विद्याओं को जानता हूँ, अपने आपसे विरक्त हो जाऊँ, यदि लडना या शिकार खेलना न हो। ऐसे सहस्र वर्ष बिताने से पहिले ही मैं अपने को मार डालू, जैसा कि प्राय: 'शब्द' की ओर से आदोलन हुआ करता है।

आदम—छोटे, अभी तुम कह रहे थे कि 'शब्द'

हाबील की जान के बदले तुम्हारी जान का सामना नहीं करता।

क़ाबील—'शब्द' इस प्रकार सम्मुख नहीं होता, जिस प्रकार तुमसे हुआ करता है। मैं एक युवा पुरुष हूँ और तुम एक बूढ़े बच्चे। कोई बच्चे और युवा से एक-सी बाते नहीं करता। और युवा सुनकर चुपचाप काँपने नहीं लगता वरन् उत्तर देता है और वह 'शब्द' से अपना मान कराता है और अन्ततः जो चाहता है उससे कहलाने लगता है।

आदम—इस बडे बोल पर तुम्हारी जीभ नष्ट हो!

हौआ—अपनी जीभ को वश में रखो और मेरे बच्चे को कोसो मत! ललस की यह भूल थी कि उसने उत्पन्न करने की प्रीनि को स्त्री और पुरुष के बीच में अ-समान भागों मे विभाजित किया। काबील! यदि हाबील के उत्पन्न करने की पीडा तुमको सहन करनी पडती या उसके मर जाने पर

दूसरा मनुष्य उत्पन्न करना पडता, तो तुम उसका वध न करते, वरन् उसकी जान को बचाने के लिए अपनी जान संकट मे डालते। यही कारण है कि ऐसी निर्मूल बातचीत, जिसने अभी आदम को भी लुभा लिया था, जब कि वह अपनी कुदाल फेंककर थोड़ी देरके लिए तुम्हारी ओर आकर्षित हो गया था, मुझको एक व्यतीत हो जानेवाली वायु ज्ञात हुई, जो किसी शव पर से बह गई हो। यही कारण है कि उत्पन्न करनेवाली स्त्री और नाश करनेवाले पुरुष के मध्य शत्रुता है। मैं तुमको जानती हूँ। तुम सुखाभिलाषी और इन्द्रियों के दास हो। जीवन को उत्पन्न करना परिश्रम और कठिनता का काम है, जिसके लिए अधिक समय की आवश्यकता है। दूसरों के उत्पन्न किये हुए जीवन को चुरा ले जाना सुगम है और थोड़ी देर का काम है। जब तक तुम कृषि करते रहे, तुम ससार को जीवित और उत्पन्न करने के

योग्य बनाए हुए थे, जिस प्रकार मैं जीवित हूँ और उत्पन्न करती हूँ। ललस ने तुमको इसीलिए स्त्रियों के परिश्रम से स्वतंत्र रखा था, चोरी और वध के लिए नहीं!

क़ाबील—शैतान उसका कृतज्ञ हो, मैं अपने पावों तले की मिट्टी के साथ पति का खेल खेलने से अधिक उत्तम अपने समय का सुव्यय निकाल सकता हूँ।

आदम—'शैतान'! यह कौन-सा नया शब्द है?

क़ाबील—सुनो, जब कभी तुमने 'शब्द' की चर्चा की, जो तुमको बातें बताया करता है, तो मैंने कभी चित्त लगाकर तुम्हारी बात नही सुनी है। दो शब्द होंगे, एक तो वह जो तुमको बुरा कहता है और तुच्छ समझता है दूसरा वह जो मेरा मान करता है और मुझ पर भरोसा रखता है। मैं तुम्हारे शब्द को 'शैतान का शब्द' कहता हूँ और अपने शब्द को 'ईश्वर का शब्द।'

आदम—मेरा शब्द जीवन का शब्द है और तुम्हारा शब्द मृत्यु का।

काबील—अच्छा तो यही सही, क्योंकि वह मुझसे कहता है कि मृत्यु वास्तव में मृत्यु नहीं है, वरन् दूसरे जीवन का एक द्वार है—ऐसा जीवन जो अधिक शक्तिशाली और तेजपूर्ण है, जो केवल आत्मा का जीवन है, जिसमें मिट्टी के ढेले और बसूले या भूख और थकान नही।

हौआ—इंद्रिय-विलास और आलस्य का जीवन, काबील ! मैं भली प्रकार जानती हूँ।

काबील—इन्द्रिय-विलास का जीवन ! हाँ क्यों नहीं, ऐसा जीवन जिसमे कोई अपने भाई की रक्षा नहीं करता, इसलिए कि उसका भाई अपनी रक्षा स्वयं कर सकता है, परन्तु क्या मैं आलसी हूँ, तुम्हारे परिश्रम के जीवन को छोड़कर क्या मुझे उन सकटों और विपत्तियों का सामना करना नही

पड़ा है जिनका तुमको कोई अनुभव नहीं ? तीर हाथ में बसूले से हलका जान पड़ता है, किंतु जो शक्ति तीर को लडनेवाले के हृदय में उतार देती है, और जो शक्ति बसूले को अक्षत और स्थूल मिट्टी के भीतर प्रविष्ट कर देती है, इन दोनों में अग्नि और जल का सम्बन्ध है। मेरी शक्ति इसकी शक्ति के समान है इसलिए कि मेरा मन पवित्र है।

आदम—यह क्या शब्द है ? पवित्र का क्या अर्थ ?

क़ाबील—जो मिट्टी से विमुख होकर ऊपर सूर्य और स्वच्छ आकाश की ओर आकर्षित हों।

आदम—बच्चे ! आकाश तो शून्य है, किंतु भूमि फलों से पूर्ण है ; भूमि हमको भोजन देती है और हमको वह शक्ति प्रदान करती है जिससे हमने तुमको और समस्त मनुष्य जाति को उत्पन्न किया। आज उस मिट्टी से सम्बन्ध-रहित हो जाओ जिसको तुम

तुच्छ समझते हो तो तुम बुरी तरह नष्ट हो जाओगे।

काबील—मुझको मिट्टी से घृणा है, मुझको भोजन से घृणा है। तुम कहते हो कि भूमि हमको शक्ति प्रदान करती है; किन्तु क्या यही भूमि विष्टा होकर हमको रोगों का शिकार नहीं बनाती? मुझको उस उत्पन्न करने से घृणा है जिस पर तुमको और माता को गर्व है और जो हमको पिछाड़कर पशुओं के तुल्य कर देता है। परिणाम भी यदि यही होता है जैसा कि आरभ रहा है, तो मनुष्य-जाति का मिट जाना अच्छा। यदि मुझको भालू की भाँति उदर भरना है, यदि लुआ को भालू की भाँति पिल्ले जनना है, तो मैं मनुष्य के बदले भालू ही होना पसन्द करूँगा, क्योंकि भालू अपने से लजाता नहीं, उसको अपने से उत्तम वस्तु का ज्ञान नहीं होता। यदि तुम भालू की भाँति तृप्त हो, तो मैं नहीं हूँ। तुम उस स्त्री के साथ रहो, जो तुमको बच्चे दे। मैं उस स्त्री के पास जाऊँगा,

जो मुझे 'स्वप्न' दे। तुम अपने भोजन के लिए भूमि टटोलते रहो, मैं अपना भोजन अपने तीर के द्वारा या तो आकाश से ले आऊँगा या उस समय उसको गिरा दूँगा, जब कि वह अपने जीवन के बल से भूमि पर चलती-फिरती होगी। यदि मेरे लिए बस यही दो उपाय हैं कि भोजन प्राप्त करूँ या मर जाऊँ, तो अपने भोजन को भूमि से जहाँ तक संभव हो दूरी पर से प्राप्त करूँगा। बैल, इसके पहले कि वह मुझे मिले, घास से बढ़कर भोजन प्राप्त करेगा। और चूँकि मनुष्य बैल से अधिक चुना हुआ है, इस लिए किसी दिन मैं अपने शत्रु को बैल खाने-के लिए दूँगा और फिर उसको मारकर आप ही खा जाऊँगा।

आदम—राक्षस ! सुनती हो हौआ ?

हौआ—तो अपने मुँह को स्वच्छ निर्मल आकाश की ओर आकर्षित करने से यही तात्पर्य है ! मनुष्य-भक्षण ! बच्चों को खा जाना ! इसका तो बिल्कुल

यही परिणाम होगा। कि जो मेमनों और बकरी के बच्चों का हुआ था, जब कि हाबील ने भेड और बकरी से प्रारभ किया था। अतत: तुम बेचारे मूर्ख ही रहे। क्या तुम समझते हो कि मैंने इन बातों पर विचार नही किया है, जिसको बच्चा जनने की पीडा सहनी पड़ती है और जिसको भोजन तैयार करने का परिश्रम करना होता है? मुझे भी अपने बच्चे के सबन्ध मे यह विचार था कि शायद मेरा शूर और वीर पुत्र किसी उत्तम वस्तु का ध्यान करे और उसकी इच्छा करे और सभव है उसका सकल्प भी करे— यहाँ तक कि उसको उत्पन्न कर ले, और परिणाम यह हुआ कि वह भालू होना और बच्चों को खा जाना चाहता है। रीछ भी आदमी को न खाए, यदि उसको शहद मिलता रहे।

काबील—मैं रीछ होना नहीं चाहता और न बच्चों को खाना चाहता हूँ। मैं आप ही नहीं जानता

कि मैं क्या चाहता हूँ सिवाय इसके कि इस बुड्ढे कृषक से कुछ अच्छा होना चाहता हूँ जिसको ललस ने इसलिए बनाया था कि मुझको उत्पन्न करने में तुम्हारी सहायता करे और जिसको तुम अब तुच्छ समझती हो, इसलिए कि वह तुम्हारी आवश्यकता पूरी कर चुका है।

आदम—(क्रोध से उत्तेजित होकर) जी चाहता है कि तुमको अभी दिखा दूँ कि मेरा कुदाल तुम्हारे बल्लम के होते हुए तुम्हारे अवज्ञा-पूर्ण शिर के दो टुकड़े कर सकता है!

क़ाबील—अवज्ञा-पूर्ण! हा हा! (अपने बल्लम को घुमाकर) आओ सबके बुड्ढे बाप! परीक्षा कर लो। लड़ाई का तनिक स्वाद चख लो।

हौआ—बस, सब मूर्खो! बैठ जाओ और चुप होकर मेरी बात सुनो। (आदम उदास होकर अपने शस्त्रों को हिलाकर बसूला फेंक देता है। क़ाबील भी हँसता

हुआ वल्लम और ढाल को भूमि पर डाल देता है, दोनों बैठ जाते हैं) मैं नहीं कह सकती कि तुममें से कौन तनिक भी मुझको तृप्त कर रहा है—तुम अपनी खेती से या वह अपने गंदी हिंसा से। मैं समझती हूँ कि ललस ने तुमको जीवन के उन सुगम उपायों से किसी के लिए भी स्वतन्त्र नहीं किया था। (आदम से) तुम वृक्षों की जड खोदते हो और भूमि के भीतर से अन्न निकालते हो, आकाश से कोई ईश्वर-प्रद भोजन क्यों नहीं उतारते? वह अपने भोजन के लिए चोरी और वध करता है। मृत्यु के पश्चात् आयु पर व्यर्थ कविता करता है और अपने भयानक जीवन को सुन्दर शब्दों में और अपने रोएँदार शरीर को अच्छे वस्त्रों में, जिससे लोग चोर और हत्यारा समझकर कोसने के बदले उसकी मान-प्रतिष्ठा करें, छिपाये हुए है। आदम के सिवा तुम सब मनुष्य मेरी सतान और मेरी संतान की सतान हो। तुम लोग मेरे पास आते हो

और अपनी प्रदर्शिनी करना चाहते हो, परन्तु तुम्हारी सारी बुद्धि और योग्यता तुम्हारी माता हौआ के सम्मुख लुप्त हो जाती है।

किसान आते हैं, लड़ने-मरनेवाले आते हैं, किन्तु दोनों से मै एक समान ऊब जाती हूँ, क्योंकि वह या तो पिछली फसल की शिकायत करते है या अपनी पिछली लडाई पर घमड करते हैं; यद्यपि पिछली फसल बिल्कुल पहली फसल के समान ही होती है, और पिछली लडाई केवल पहली लडाई की शत्रुता होती है। मैं यह सब हजारों बार सुन चुकी हूँ। कुछ लोग आकर अपने सबसे छोटे बच्चे की चर्चा करते हैं; कि मेरे सबसे समझदार और प्यारे बच्चे ने 'कल' कहा है, या यह कि वह और बच्चों से अधिक अनोखा और हँसमुख है, और मुझको आश्चर्य, प्रसन्नता और रुचि को प्रकट करना पडता है, यद्यपि पिछला लडका बिल्कुल पहले लडके के समान ही

होता है और वह कोई ऐसी नई बात नहीं कहता जिसको तुम्हारे और हाबील के मुँह से सुनकर मैंने और आदम ने आनन्द न उठाया हो, इसलिए कि तुम दोनों संसार में सबसे पहले बच्चे थे और हम को उस आश्चर्य और आनन्द से पूर्ण करते थे जिसको, जब तक संसार की स्थिति रहेगी, फिर कोई दो व्यक्ति अनुभव नहीं कर सकते। जब मैं उत्पन्न करने के योग्य न रहूँगी, तो अपने पुराने बाग मे, जो कूडा-करकट का ढेर हो रहा है, चली जाऊँगी, इस विचार से कि कदाचित् बात करने के लिए फिर सर्प मिल जाय; किन्तु सर्प को तुमने हमारा शत्रु बना दिया है। उसने बाग छोड दिया है, या मर गया है। मैं अब उसको कभी नहीं देखती। इसलिए मुझको लौट आना पडता है और आदम की उन्हीं बातों को सुनना पडता है, जो दस हजार बार सुन चुकी हूँ, या परपोते की सेवा-सुश्रूषा करनी पडती है, जो अब युवा हो

चुका है और अपने बड़प्पन से मुझको भयभीत करना चाहता है। आह! कैसा शिथिल कर देनेवाला जीवन है और अभी इसी प्रकार लगभग सात सौ वर्ष काटने होंगे!

क़ाबील—दीन माता! देखती हो, जीवन कितना विशाल है! मनुष्य प्रत्येक वस्तु से थक जाता है। आकाश के नीचे कोई नई वस्तु नहीं।

आदम—(हौआ से घृणा-पूर्ण भाव में) यदि तुमको शिकायत करने के अतिरिक्त कोई काम नहीं है तो तुम क्यों जी रही हो?

हौआ—इसलिए कि अभी आशा शेष है।

काबील—किस बात की?

हौआ—तुम्हारे और मेरे स्वप्न के सत्य सिद्ध होने की, नई और उत्तम वस्तुओं के उत्पन्न होने की। मेरी सन्तान और सन्तान की सन्तान कृषक हैं, न कि लड़ाके। उनमे से कुछ लोग खेती करेंगे, न कि लडाई।

वह तुम दोनों से अधिक उपयोगी हैं। वह दुर्बल हैं, भीरु है, और प्रदर्शन के इच्छुक हैं। फिर भी वह मैले-कुचैले रहते हैं और बाल कटाने का कष्ट भी सहन नहीं करते। वह ऋण लेते है और कभी परिशोध नही करते। इस पर भी उनको जिस वस्तु की आवश्यकता होती है, लोग उनको दे देते है इसलिए कि वह सुन्दर शब्दों मे सुन्दर झूठ बोलते हैं। वह अपने स्वप्न को स्मरण रख सकते हैं। वह बिना सोए हुए स्वप्न देख सकते हैं। उनकी सकल्प-शक्ति ऐसी नहीं कि वह स्वप्न देखने के स्थान मे सृजन कर सकें; किंतु सर्प ने कहा था कि वह लोग जो दृढ विश्वास रखते हैं, प्रत्येक स्वप्न को अपने सकल्प से उत्पन्न कर सकते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं, जो बाँसुरी के कुछ टुकड़े काटकर उनको फूँकते हैं, जिनसे वायु में 'शब्द' के मनोहर स्वर उत्पन्न होते हैं और कुछ तो इन भाँति-भाँति के स्वरों को परस्पर मिला देते हैं,

और तीन-तीन टुकडों से एक ही समय शब्द निकलते हैं और मेरे प्राणों को उभारकर उन वस्तुओं तक पहुँचा देते हैं, जिनके लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। और कुछ मिट्टी के पशु बनाते हैं और पत्थर पर आकृतियाँ ठोंक देते है और मुझसे कहते है कि इन आकृतियों की स्त्रियाँ उत्पन्न करो। मैंने उन आकृतियों पर विचार किया है और फिर सकल्प किया है और लड़की उत्पन्न भी की है, जो अब बढ़कर उन आकृतियों से मिल गई है। और कुछ लोग हैं जो बिना उँगलियों पर गिने हुए सख्या सोच लेते हैं, और रात्रि के समय आकाश की ओर देखा करते हैं। यह लोग तारों के नाम रखते हैं और पूर्व ही से यह बता सकते हैं कि सूर्य कब काले तवे से ढक जायगा। तूबाल को देखो जिसने इस चर्खे को बनाकर मेरे श्रमों को बहुत-कुछ घटा दिया है, फिर हनूक को देखो जो पहाड़ियों पर फिरा करता है और बराबर 'शब्द'

की बातें सुना करता है ; उसने अपनी इच्छा को उस 'शब्द' की इच्छा पूरी करनेके लिए छोड़ दिया है। स्वय उसमे बहुत-कुछ 'शब्द' की महिमा आ गई है। जब यह लोग आते है, तो सदैव कोई-न-कोई नई बात या नई आशा अवश्य होती है और जीवित रहने के लिए बहाना मिल जाता है। वह कभी ना नहीं चाहते, क्योंकि वह सदैव सीखते रहते हैं और कोई-न-कोई अन्य वस्तु या विद्या उत्पन्न करते रहते हैं। और उत्पन्न नहीं करते, तो कम-से-कम उनके स्वप्न देखते रहते हैं। और इसके बाद भी काबील, तुम अपनी लडाई और नाशकारिता पर मूर्खों की भाँति इतराते हुए आते हो और मुझसे कहते हो कि 'यह सब अत्यन्त प्रभावशाली है, मैं शूर हूँ और मृत्यु या मृत्यु के भय के अतिरिक्त कोई दूसरी वस्तु जीवन को प्रिय नहीं बना सकी।' बस, दुष्ट बालक! यहाँ से चले जाओ और तुम आदम! अपना काम देखो और

इसकी बातें सुनने में अपना समय न नष्ट करो।

क़ाबील—मैं कदाचित् बहुत बुद्धिमान तो नहीं हूँ किन्तु......

हौआ—(बात काटकर) हाँ कदाचित् नहीं हो, परन्तु इस पर अभिमान न करो। यह कोई प्रशंसा योग्य बात नहीं है।

काबील—तो भी माता ! मेरे भीतर एक निर्विवाद शक्ति है जो मुझको बताती है कि मृत्यु जीवन में अपना भाग अवश्य लेती है। अच्छा, मुझे यह बताओ कि मृत्यु का आविष्कार किसने किया ?

(आदम चौंक पड़ता है, हौआ अपना चरखा छोड़ देती है। दोनों अत्यन्त विस्मय का प्रदर्शन करते हैं।)

काबील—तुम दोनों को क्या हो गया है ?

आदम—लड़के, तुमने हमसे एक भयानक प्रश्न किया है।

हौआ—तुमने वध आविष्कार किया, बस इतना कह देना पर्याप्त समझो।

काबील—वध मृत्यु नहीं है। तुम मेरा अभिप्राय समझते हो? जिनको मैं वध करता हूँ, यदि उनको मैं छोड दूँ, तो भी वह मर जायँगे। यदि मैं वध न किया जाऊँ, तो भी मर जाऊँगा। मुझको इसमें किसने फँसाया? मैं पूछता हूँ कि मृत्यु का किसने आविष्कार किया?

आदम—लड़के! बुद्धि की बात करो, क्या तुम सदैव का जीवन सहन कर सकते थे? तुम्हारा विचार है कि तुम सहन कर सकते थे, चूँकि जानते हो कि अपने विचार की परीक्षा नहीं कर सकते; परन्तु मैं जानता हूँ कि अनंत और अशेषता के रूप मे बैठकर अपने भाग्य को झींखना क्या अर्थ रखता है। तनिक विचार तो करो, कभी छुटकारा न होता और तुम नदी के तट पर बालू के जितने कण हैं,

उनसे अधिक दिनों तक आदम ही आदम रहते और फिर भी परिणाम से उतनी दूर रहते, जितना कि पहले थे ! मेरे भीतर बहुत कुछ है, जिससे कि मुझे घृणा है और जिसे मैं निकालकर फेंक देना चाहता हूँ। अपने माता-पिता के कृतज्ञ बनो जिन्होंने तुमको इस योग्य बनाया कि अपना बोझ नए और अच्छे मनुष्यों को सौंप दो और इस प्रकार तुम्हारे लिए प्रत्येक स्थिर-शांति को उपस्थित किया, क्योंकि हमीं ने मृत्यु का भी आविष्कार किया था।

क़ाबील—(उठकर) तुमने अच्छा किया, मैं भी सदैव जीवित रहना नहीं चाहता, किन्तु यदि मृत्यु को तुमने आविष्कार किया, तो मुझे दोष न लगाओ, क्योंकि मैं मृत्यु का प्रबन्धक हूँ।

आदम—मैं तुमको लांछन नहीं लगाता। विश्वास मानकर चले जाओ, मुझे खेती के लिए और अपनी माँ को चरखा कातने के लिए छोड़ दो।

काबील—तुमको इसलिए छोड़ देता हूँ, किंतु मैंने तुम लोगों को एक उत्तम मार्ग दिखा दिया है। (शव और भाला उठा लेता है) मैं अपने शूर-वीर मित्रों और उनकी सुंदरी स्त्रियों के पास चला जाऊँगा। (काँटों की दीवार की ओर जाता है) जब आदम धरती खोदा करता था और हौआ चरखा चलाया करती थी, उस समय सभ्य मनुष्य कहाँ थे ? (झाका दगाता हुआ जाता है और फिर चुप होकर दूर से पुकारता है) माता ! विदा !

आदम—(बड़बड़ाते हुए) पामर स्वान ! टट्टी को फिर बंद कर सकता था। (वह स्वयं टट्टी को मार्ग में खड़ी कर देता है) उसकी और उसी प्रकार के लोगों की बदौलत मृत्यु जीवन पर विजय पाती जाती है। इसी समय देखो मेरे बहुत से पोते और नाती जीवन को पूर्ण-रूप से जानने के पहले ही मर जाते हैं। कुछ परवाह नहीं; (अपने हाथ पर थूकता है

और अपनी कुदाल उठा लेता है) खेती सीखने के लिए जीवन अभी यथेष्ट विशाल है, यद्यपि यह लोग संक्षिप्त बना रहे हैं !

हौआ—(सोचते हुए) हाँ, खेती के लिए और लड़ने के लिए। किंतु क्या दूसरे अत्यंत आवश्यक कामों के लिए भी जीवन यथेष्ट विशाल है ? क्या यह लोग इतने समय तक जीवित रहेंगे कि 'मन' खा सकें ?

आदम—'मन' क्या है ?

हौआ—वह आहार जो आकाश से लाया जाय, जो वायु से बना हो और मलिन रीति से धरती खोद-कर न निकाला गया हो। क्या लोग अपनी अल्पायु में समस्त तारों की गति जान लेंगे ? हनूक को तो 'शब्द' का अर्थान्तर सीखने में दो सौ बरस लग गए। जब वह केवल अस्सी बरस का बच्चा था, तो उसके शब्द को समझने के बाल-प्रयत्न काबील के

प्रलयंकारी क्रोध से अधिक भयानक थे। जब उनकी परमायु अल्प हो जायगी तो लोग खेती करेंगे, लड़ेंगे, मारेंगे और मरेंगे और उनके बच्चे हनूक उनसे कहेंगे कि 'शब्द' की इच्छा यही है कि वह सदैव या तो खेती करते रहें या लड़ते रहें और मारते-मरते रहें।

आदम—यदि वे स्वयं आलसी हैं और उनका संकल्प यही है कि मर जायँ तो मैं उनको रोक नहीं सकता। मैं एक सहस्र वर्ष तक जीता रहूँगा। यदि उनको यह स्वीकार नहीं, तो वह मर जायँ और धिक्कार में फँसे रहें।

हौआ—धिक्कार ? यह क्या है ?

आदम—यह उन लोगों की दशा है, जो मृत्यु को जीवन से अच्छा कहते हैं। तुम चरखा चलाए जाओ, बेकार न बैठी रहो, जब कि मैं तुम्हारे लिए रोम-रोम की शक्ति व्यय कर रहा हूँ।

हौआ—(धीरे से चरख़ा घुमाते हुए) यदि तुम मूर्ख होते तो हम दोनो के लिए खेती और चरखे से उत्तम जीवन का कोई द्वार निकाल लेते!

आदम—अपना काम करो, अन्यथा विना रोटी के रहना पडेगा।

हौआ—मनुष्य केवल रोटी से जीवित नहीं रहेगा, और भी कोई वस्तु है। हम अभी नहीं जानते कि वह क्या है; किन्तु किसी दिन हमको ज्ञात हो जायगा और तब हम अकेले उससे जीवन निर्वाह करेंगे और फिर न खेती रह जायगी, न चरख़ा; न लड़ना होगा, न मारना।

[वह विवश होकर चरख़ा चलाती है, आदम अधीरता के साथ भूमि खोदता है।]

समाप्त